लाख की खेती
पूछें आप बतायें हम

डॉ. ए. के. जायसवाल
प्रधान वैज्ञानिक

प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण विभाग
भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्)
नामकुमः राँची-834010
झारखण्ड।

आमुख

वर्तमान में लाख की खेती की ओर लोगों का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित हुआ है। इसके मूल्य में इधर काफी स्थिरता आई है एवं उत्पादकों को भी काफी लाभ हो रहा है। कई प्रान्तीय सरकारों ने भी इस व्यवसाय को आय और रोजगार उपलब्ध कराने के लिए अपने क्षेत्रों में लागू कर दिया है जिससे इसका लाभ सीधे ग्रामीण और वनवासियों को प्राप्त हो एवं बदलते हुए परिस्थितियों में जहाँ अब गैर पारम्परिक कृषि उत्पाद की आवश्यकता देखी जा रही है और अनुसंधान को सीधा विपणन से जोड़ा जा रहा है, लाख उत्पादन की विशेष भूमिका प्रत्यक्ष रूप से सामने आ रही है। आज ऐसे लोग भी हैं जिन्हें लाख के बारे में कुछ भी नहीं मालूम लेकिन वे विशेष रूचि दिखा रहे हैं। दूसरे ऐसे भी लोग हैं जो अपने तरीके से ही लाख का उत्पादन करते हैं और वैज्ञानिक विधि एवं नई विकसित तकनीकों के बारे में ज्ञान नहीं है। तीसरे लोग संख्या में काफी कम हैं जो नई विकसित तकनीकों का स्वाद ले रहें हैं। इन सभी लोगों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर सामान्यत: पूछे जाने वाले प्रश्नों और उनके उत्तर को संग्रहित करके इस पुस्तक में प्रस्तुत किया गया है। शोध कार्यो के फलस्वरूप विकसित तकनीकों के अतिरिक्त कृषकों द्वारा विकसित लाभकारी विधि को भी समन्वित कर इस प्रकार से वर्णित करने का प्रयास किया गया है कि जिसे एक साधारण कृषक भी आसानी से उपयोग कर सके।

लेखक

दो शब्द

लाख की खेती आदिकाल से ही ग्रामीणों एवं वनवासियों का व्यवसाय रहा है क्योंकि लाख उत्पादन में अधिकतर पिछड़े लोग ही जुड़े हैं अत: नीति निर्धारकों की विशेष जिम्मेवारी बनती है कि उत्पादकों के हितों को ध्यान में रखकर ही कोई नीति बनायी जाये। आर्थिक उदारीकरण के कारण अनुसंधान को सीधा विपणन से जोड़ने की आवश्यकता हो गयी है हमारे देश में संसाधनों की कमी नहीं है हमें दूसरे देश की ही राह पर नहीं चलना है अपितु संसाधनों को ध्यान में रखकर ही अपनी राह तय करनी है। इसी दिशा में लाख का उत्पादन वर्तमान समय में एक महत्वपूर्ण व्यवसाय के रूप में सामने आया है। लाख कीट के पोषक वृक्ष करोड़ो की संख्या में हमारे देश में विद्यमान हैं जिनका उपयोग आसानी से किया जा सकता है क्योंकि इससे वृक्षों पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता। जानकारी रखने वाले लोग इस कार्य को पहले से ही कर रहे हैं। वर्तमान में लाख का उपयोग कई नये क्षेत्रों में होने के कारण इसकी माँग भी बढ़ गई है। लोगों को लाख की खेती सबंधित तकनीकी जानकारी साहित्य द्वारा उपलब्ध कराना भारतीय प्राकृतिक रॉल एवं गोंद संस्थान की विशेष जिम्मेदारी है। इसी दिशा में इस पुस्तक की इस प्रकार रचना की गई है कि इसमें आम लोगों के द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों को शामिल किया गया है एवं इनके उत्तर वैज्ञानिक दृष्टि से कारण सहित वर्णित किये गये हैं। अनुसंधान के परिणामस्वरूप विकसित तकनीकों को भी शामिल करने का प्रयत्न किया गया है। इसके अतिरिक्त लाख कृषकों द्वारा अपनायी गयी कई महत्वपूर्ण और उपयोगी विधियों का भी समन्वय किया गया है जिससे इसको अपनाना आसान हो। हमें आशा है कि साधारण भाषा में लिखी गयी यह पुस्तक समाज के विभिन्न वर्गो के लोगों के लिए अति उपयोगी साबित होगी एवं जन साधारण इससे लाभान्वित होगें। लेखक विभिन वर्गों द्वारा (कृषक, लाख उत्पादक, व्यवसायी, अध्यापक) दी गई टिप्पणी का स्वागत करता है।

निदेशक
भारतीय प्राकृतिक रॉल एवं गोंद संस्थान
नामकुम, राँची।

भूमिका

यदि आप पूछें कि हम अपने क्षेत्र के पलास, बेर, कुसुम, पीपल, पोढ़ो, पुटकल इत्यादि के जंगल को कैसे बचायें? बंजर भूमि का उपयोग कैसे करें? बिना सिंचाई के कौन सी खेती करें? कम मेहनत और कम लागत में कौन सी खेती करें? कौन सी खेती करें जिसकी विपणन की समस्या न हो? गाँव में रोजगार और अतिरिक्त आय कैसे प्राप्त करें? गाँव में रोजगार का पलायन कैसे रोकें? ग्रामीण महिलाओं के लिए अतिरिक्त आमदनी एवं कार्य कैसे उत्पन्न करें? इत्यादि। इन सभी का आसान सा उत्तर है **"लाख की खेती"**।

वैसे तो देश के कई क्षेत्रों में लाख की खेती होती चली आ रही है परन्तु कई स्थानों पर उत्पादन कम या न होने के कारण लोगों ने छोड़ दिया है। इसका प्रमुख कारण है खेती में कुछ त्रुटियाँ या ज्ञान में कमी। अनुचित तरीके से बीहन लाख कीट का स्थानान्तरण, बिना नर्म टहनी देखे पेड़ों पर लाख कीट छोड़ना, शिशु कीट निर्गमन पूरा होने के पश्चात् भी पेड़ों पर लाख डंडी छोड़े रखना। बिना शत्रु कीट प्रबन्धन के लाख खेती गलत समय पर बीहन की कटाई करना इत्यादि त्रुटियाँ और अज्ञानता ही उत्पादन में कमी का मुख्य कारण है। वर्तमान पुस्तक में लाख खेती की मूल जानकारी उपलब्ध कराने का एक प्रयास है जिसमें वैज्ञानिक विधि का समन्वय किया गया है जिससे अधिक से अधिक लोगों को इसका लाभ मिल सके।

लेखक

1.	**लाख क्या है एवं यह कैसे प्राप्त होता है?** लाख एक प्राकृतिक राल है जो एक सूक्ष्म मादा कीट अपने शरीर के वाह्य आवरण के रूप में निर्मित करती है। मादा लाख कीट स्वयं की तथा अपने बच्चों की सुरक्षा हेतु इसका निर्माण करती है। अत: एक प्रकार से यह सुरक्षात्मक आवरण लाख कीट का निवास स्थान यानि गृह है। ये कीट पोषक वृक्ष की टहनियों से उसका रस चूसकर जीवित रहते हैं जिसका काफी उपयोग है इसके रक्त में उपस्थित रंग का भी औधोगिक महत्व है।
2.	**छिली लाख क्या है?** डंडियों से अलग की गयी लाख को ही छिली लाख कहते हैं।
3.	**लाख डंडी किसे कहते हैं?** लाख लगी डंडियों को लाख टहनी या डंडी (लैकस्टिक) कहते हैं।
4.	**चौरी लाख क्या है?** छिली लाख को छोटे छोटे टुकड़े करके पानी से धुलाई करने के पश्चात प्राप्त लाख को ही चौरी लाख (सीड लैक) कहते हैं अत: यह आशिंक रूप से शुद्ध लाख है।
5.	**चपड़ा क्या है?** फ्लेक्स यानि पत्ती के रूप में साफ की गयी लाख को ही चपड़ा कहते हैं।
6.	**बीहन लाख या बीज लाख क्या है?** जीवित एवं पकी लाख जिसमें शिशु कीट बन चुके हों और निकलने की स्थित में हों। पूरी डंडी समेत बीहन लाख या बीज लाख कहलाती है। बीहन लाख = पोषक वृक्ष टहनी + माँ कीट + शिशु कीट
7.	**लाख कीट कितने प्रकार के होते हैं और इन्हे किस–किस पोषक वृक्ष पर पाला जा सकता है?** लाख कीट विशेष रूप से दो प्रकार के होते हैं जिन्हे कुसमी और रंगीनी के नाम से जाना जाता है ये दोनों ही वर्ष में दो फसल देते हैं लेकिन प. बगांल और उड़ीसा के समुन्द्री क्षेत्र के आस–पास वर्ष मे तीन फसल देने वाले भी लाख कीट पाये जाते हैं जो कुसुम, बेर और रेन ट्री वृक्षों पर असानी से

	पल सकते हैं कुसमी लाख का मुख्य पोषक वृक्ष कुसुम या कोसम (*स्लीचेरा ओलियोसा*) तथा रंगीनी का पलास या ढ़ाक (*ब्यूटिया मोनोस्पर्मा*) है। बेर वृक्ष की टहनियों पर दोनों प्रकार के कीट पाले जा सकते हैं।
8.	**विभिन्न लाख कीटों का फसल चक्र क्या है?** कुसमी लाख से वर्ष में दो फसलें (प्रत्येक 6 माह की होती है) जो ग्रीष्मकालीन (जेठवी) और शीतकालीन क्रमश: जनवरी/फरवरी से जून/जुलाई/अगस्त तथा जून/जुलाई/अगस्त से जनवरी/फरवरी तक की होती है रंगीनी लाख से भी वर्ष में दो फसल वर्षाकालीन (कतकी) तथा ग्रीष्मकालीन (बैसाखी) लेते हैं जो क्रमश: करीब 4 तथा 8 माह की होती है। वर्षा कालीन फसल जून/जुलाई से अक्टूबर/नवम्बर तथा ग्रीष्मकालीन अक्टूबर/नवम्बर से जून/जुलाई तक तैयार होती है।
9.	**तीन फसली लाख कीट का फसल चक्र क्या है?** यह लाख सामान्यत: मार्च/अप्रैल, जुलाई/अगस्त तथा अक्टूबर/नवम्बर में तैयार होती है। शीतकालीन फसल (अक्टूबर/नवम्बर से मार्च/अप्रैल) सबसे अधिक 5 माह, तत्पश्चात ग्रीष्मकालीन (मार्च/अप्रैल से जुलाई/अगस्त) तथा अन्त में वर्षाकालीन फसल (जुलाई/अगस्त से अक्टूबर/नवम्बर) सबसे कम समय 3 माह में तैयार होती है।
10.	**प्रमुख व्यवसायिक फसल कौन सी है जिनसे कृषकों को अधिक उत्पादन प्राप्त होता है?** ग्रीष्मकालीन रंगीनी फसल तथा शीतकालीन कुसमी फसल ही मुख्य व्यवसायिक फसल है। रंगीनी लाख की वर्षाकालीन तथा कुसमी लाख की ग्रीष्मकालीन फसल मुख्य रूप से बीहन उत्पादन के लिये ही उपयोग की जाती है।
11.	**एक लाख-कीट करीब-करीब कितना लाख निक।लती है?** यह लाख कीट के प्रकार एवं फसल के ऊपर निर्भर करती है। सामान्यत: रंगीनी लाख की कतकी और बैसाखी फसल से क्रमश: 8 और 12 मि.ग्रा. लाख प्रति कीट तथा कुसमी लाख कीट से दोनों फसल द्वारा 25-30 मि.ग्रा. प्रति मादा कीट निकलती है।
12.	**क्या कुसमी लाख को पलास पर तथा रंगीनी लाख को कुसुम वृक्ष पर पाल सकते हैं?**

	कुसमी लाख को आंशिक रूप से कुछ पलास पेड़ों पर पाल सकते हैं लेकिन उत्पादन पर्याप्त रूप से नहीं होगा। ऐसी स्थिति में सिर्फ शीतकालीन फसल ही जुलाई/अगस्त में लगा सकते हैं। रंगीनी लाख कुसुम वृक्ष पर नहीं पाल सकते।
13.	**बेर वृक्ष पर लाख खेती हेतु कौन सा कीट उपयुक्त है?** बेर का वृक्ष दो-फसली (*बाइवोलटाईन*) और तीन-फसली लाख (*ट्राइवोलटाईन*) दोनों के लिये ही उपयुक्त है। लेकिन इस पर (रंगीनी लाख की बैसाखी कच्ची लाख छोड़कर) गर्मी की फसल लेना उचित नहीं है।
14.	**प्रमुख पोषक वृक्ष कौन से हैं जिस पर दोनों (कुसमी और रंगीनी) कोई भी लाख लगा सकते हैं?** बेर (*जिजीफस मारीसियाना*), आस्ट्रेलियन बबूल (*अकेसिया आरीकुलीफारमिस*), भालिया (*फ्लेमिजिंया मैक्रोफिला*), खैर (*अकेसिया कैटचू*), पुतरी (*क्रोटोन आबलांगीफोलियस*) जैसे वृक्ष पर दोनों में से कोई भी लाख लगा सकते हैं।
15.	**लाख खेती प्रारम्भ करने के लिये किन–किन वस्तुओं की आवश्यकता होती है?** लाख कीट के पोषक वृक्ष, कुसुम, पलास इत्यादि, यंत्र दावली/कुल्हाड़ी, लाख छिलाई मशीन या चाकू, रोलकर सिकेटियर, राकिंग स्प्रेयर, लोहे की बाल्टी या 15 कि. ग्रा. का टिन, नाइलॉन नेट (60 मेश) की थैली, प्लास्टिक/नाइलॉन सुतली एवं बीहन लाख (बीज लाख)।
16.	**हमारे पास काफी संख्या में पलास वृक्ष उपलब्ध हैं इन्हें लाख खेती के लिये कैसे उपयोग कर सकते हैं?** जिन क्षेत्रों में बीहन लाख की आवश्यकता अधिक है यानि जहाँ लाख खेती प्रारम्भ करने जा रहे हैं, कुल पलास वृक्षों को दो खण्डो में बाँटकर (प्रत्येक खण्ड में वृक्षों की संख्या करीब बराबर हो) खेती करें। प्रथम वर्ष एक खण्ड के वृक्ष की काट–छाँट अप्रैल माह में करें जिससे 6 माह पश्चात अक्टूबर/नवम्बर में नर्म टहनियों पर कीड़ा छोड़ा जा सके। फसल कटाई एक वर्ष पश्चात अक्टूबर/नवम्बर में करें लेकिन सिर्फ ऐसी टहनियाँ काटें जहाँ लाख मोटी हो गयी हो। बिना लाख कीट की टहनियाँ या जहाँ कीट दूर–दूर बैठे हों न काटें। अगले वर्ष अप्रैल माह में पूरे वृक्ष की काट–छाँट कर दें। दूसरे खण्डों के वृक्षों की काट–छाँट पहले की ही भाँति अप्रैल में दूसरे वर्ष

	करना चाहिये तथा समयानुसार प्रत्येक प्रक्रिया इस प्रकार से करनी चाहिये कि एक खण्ड का उत्पादित बीहन दूसरे खण्ड के वृक्षों पर तथा दूसरे का पहले खण्डों के वृक्षों पर लगाया जा सके। आवश्यकता से अधिक बीहन बाजार में बेच दें।
17.	**पलास पर कच्ची लाख का उत्पादन कैसे करेंगे?** ऊपरोक्त विधि के अनुसार बीहन उत्पादन करते-करते कुछ ऐसे पेड़ों का तीसरा खण्ड बनायें जिस पर सामान्यत: गर्मी में लाख मर जाती हो। ऐसे वृक्षों का उपयोग कच्ची फसल प्राप्त करने के लिये करें जिसे अप्रेल में ही काट लिया जाता है और छील कर शीघ्र से शीघ्र बेच दिया जाता है। इसी समय वृक्षों की काट-छाँट भी हो जाती है।
18.	**पलास के अच्छे और खराब वृक्षों को कैसे अलग करेंगे?** लाख उत्पादन की द्रष्टि से अच्छे वृक्ष वे हैं जिन पर लाख कीट अच्छी तरह से जीवित रहते हैं एवं उत्पादन भी अधिक होता है सामान्यत: ऐसे पेड़ों की टहनियाँ छतरीनुमा होती है तथा वृक्ष ठंडे स्थानों में तथा तलाब के किनारे या मेड़ों पर पाये जाते हैं जब कि खराब वृक्षों की पत्तियाँ सामान्यत: छोटी नर्म टहनिया कम संख्या में तथा वृक्ष ऐसी जगह होते हैं जहाँ जमीन में पानी का स्तर बहुत नीचे होता है जिससे गर्मी के दिनों में पेड़ों को पानी उपलब्ध नहीं हो पाता।
19.	**कुछ पलास वृक्षों में पतली टहनियाँ बहुत छोटी तथा संख्या में भी कम होती हैं। पेड़ रोगी-रोगी से भी दिखाई देते हैं। क्या उपाय करें कि पेड़ को लाख खेती योग्य बनाया जा सके?** ऐसे वृक्षों की सर्वप्रथम फरवरी माह में कटाई- छंटाई करना चाहिये इसके फलस्वरूप तेजी से नई डालियाँ निकलेंगी जो शीघ्र ही मोटी हो जायेंगी। तत्पश्चात दूसरे वर्ष अप्रैल माह में नियमापूर्वक काट-छाँट करके 6 माह पश्चात अक्टूबर/नवम्बर में लाख कीट छोड़ना चाहिये। प्रथम वर्ष फरवरी (काट-छाँट): द्वितीय वर्ष अप्रैल (पुन: काट-छाँट): द्वितीय वर्ष अक्टूबर/नवम्बर (कीट संचारण)।
20.	**लगातार कई वर्षो से फरवरी-मार्च में पलास और बेर वृक्ष पर रंगीनी लाख फसल मर रही है इसे बचाने का क्या उपाय है?** इसके लिये पेड़ों की काट-छाँट सही विधि और सही समय से सुनिश्चित करें। कीट संचारण हेतु बीहन उचित मात्रा ही पेड़ों पर चढायें। ऐसे स्थनों पर

	फसल चक्र बदल दें यानि 3-4 वर्ष तक सिर्फ वर्षाकालीन फसल प्रारम्भ कर दें। प्रत्येक वर्ष बीहन लाख उन स्थानों से लायें जहाँ ग्रीष्मकालीन फसल सफलता पूर्वक हो जाती है कीट संचारण हेतु 60 मेश नाइलॉन नेट की थैली का प्रयोग अवश्य करें जिससे परजीवी कीटों की जनसख्या को भी नियन्त्रित किया जा सके।
21.	**हमने पलास पर वर्षाकालीन फसल हेतु जुलाई में कीट संचारण किया था लेकिन अक्टूबर/नवम्बर में लाख मोटा नहीं हो पाया। मादा कीट भी छोटा रह गया क्या इसकी कोई दवा है जिससे कीड़ा मोटा हो जाये?** रंगीनी लाख की वर्षाकालीन फसल सिर्फ 4 माह की होती है अत: मादा कीट बहुत थोड़ी ही लाख निकालती है। अत: टहनियों पर भी लाख कीट कम नजर आते हैं इसको मोटा करने की कोई दवा नहीं है। अक्टूबर/नवम्बर में मोटी लाख पाने के लिये ग्रीष्म और वर्षा कालीन फसल संयुक्त रूप से लें।
22.	**पलास वृक्षों पर गर्मी के मौसम में अधिक तापमान से फसल को कैसे बचा सकते हैं?** इसके लिये कुछ सावधानियां लेनी पड़ती है जैसे 1. नर्म टहनियों वाले वृक्षों पर ही कीट संचारण करें जिससे कीटों को गर्मी में भी पर्याप्त भोजन उपलब्ध हो सके 2. अक्टूबर/नवम्बर में कीट संचारण करते समय कम बीज लाख लगाायें (10-12 ग्रा. प्रति मी. नर्म टहनी या 400-500 ग्राम प्रति औसत आकार का वृक्ष) 3. फरवरी के दूसरे पखवाड़े में लाख कीट वृक्षों की आंशिक काट-छाँट (सिकेटियर से ऐसी पतली टहनियाँ काट कर हटा दें जिन पर लाख कीट नहीं हो या मर गये हों) 4. अप्रैल माह में आंशिक फसल कटाई जिससे पेड़ों पर लाख कीटों की मात्रा कम किया जा सके 5. ग्रीष्मकालीन फसल के लिये ऐसे वृक्ष का उपयोग करें जो ठंडी जगह या तालाब के नजदीक हों 6. फरवरी मार्च मे फूल लगी हुयी टहनियों को विशेष रूप से काट कर हटा दें 7. जिस दिन तापमान 45-46^{o} से. तक पहुंचे, 2-3 दिन के अन्तराल पर शाम को पानी का छिड़काव करें ।
23.	**क्या अक्टूबर/नवम्बर माह में बिना काट–छाँट वाले वृक्षों पर कीट संचारण कर सकते है ? यदि हाँ, तो क्या सावधानियाँ लेनी पड़ेंगी?** हाँ, किया जा सकता है बशर्ते उस पर नर्म टहनियाँ उपलब्ध हो, इसके अतिरिक्त प्रत्येक टहनी की 3-4 फीट ऊपर की पत्तियों छोड़कर नीचे के पत्तियों

	को तोड़कर हटा देना चाहिये जिससे वृन्त (पत्तों की डंडियों) पर लाख शिशु कीट कम से कम बैठे अन्यथा फरवरी माह में पतझड़ के समय कीट बर्बाद हो जायेंगे। ऐसे वृक्षों की फरवरी माह में आंशिक काट-छाँट भी कर देना चाहिये जिससे जून/जुलाई में पुन: कीट संचारण के समय नई टहनियाँ पर्याप्त संख्या में उपलब्ध हो जाये। यह प्रक्रिया गर्मी और बरसात की सम्मिलित फसल के लिये करें।
24.	**क्या पलास वृक्ष से फरवरी/मार्च माह में पत्तियों के गिरने के कारण होने वाले नुकसान से बचा सकता है यदि हाँ तो कैसे?** सामान्यत: अक्टूबर/नवम्बर माह में लाख शिशु कीट पत्तियों पर बैठते हैं जब नर्म एवं रसदार टहनियाँ उपलब्ध नहीं होती। अत: कीट सचांरण के पहले कुछ पत्तियों को बाँस द्वारा तोड़ कर हटाने से समस्या का समाधान काफी हद तक किया जा सकता है लेकिन पत्तियाँ हटाते समय छाल नहीं हटनी चाहिये। इतनी सावधानी अवश्य रखें।
25.	**कीट संचारण हेतु कितना बीहन चढ़ाना चाहिये?** पलास से बीहन उत्पादन हेतु ग्रीष्म और वर्षा कालीन की सम्मिलित फसल लेते हैं इसके लिये 10-15 ग्राम बीहन प्रति मीटर की दर से उपयुक्त रहेगा। एक औसत आकार के पलास वृक्ष पर 400-450 ग्राम बीहन लगेगा। जिसके लिये 50 ग्राम का बण्डल बनाना चाहिये। ग्रीष्मकालीन कच्ची फसल के लिये 20-25 ग्राम प्रति मीटर नर्म टहनी यानि 1.5 से 2 कि.ग्रा. एक औसत आकार के वृक्ष के लिये पर्याप्त होगी। बेर वृक्ष सामान्यत: बड़े होते हैं अत: इसके लिये एक बड़े वृक्ष पर 5-6 कि.ग्रा. तक बीहन लगा सकता हैं जिसके लिये 100 ग्रा. का बण्डल बनाना चाहिये। कुसमी लाख, वृक्ष पर 20 ग्रा. प्रति मी. टहनी (6-8 कि.ग्रा. प्रति वृक्ष) लगा सकते हैं जो पेड़ों के आकार पर निर्भर करता है।
26.	**पलास पर यदि अक्टूबर/नवम्बर में बीहन नहीं चढ़ा सके तो जून-जुलाई में कितना बीहन चढ़ा सकते हैं?** वर्षा ऋतु में पलास वृक्ष में भोजन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रहता है अत: 10-15 ग्रा. की जगह 20-25 ग्रा. प्रति. मीटर टहनी की दर से लगाना चाहिये। इस समय अधिक बीहन इसलिये भी लगाते हैं कि वृन्त पर भी कीट बैठ जायें जिससे अक्टूबर/नवम्बर में बीहन लाख प्रचुर मात्रा में मिल जायेगा।

27.	**क्या अधिक से अधिक बीहन लाख लगाकर अधिक उत्पादन ले सकते हैं?** नहीं, अधिक बीहन लगाने से भोजन की कमी के कारण टहनियाँ सूखने लगेंगी फलस्वरूप कीट भी मरने लगेंगे एवं उत्पादन बहुत घट जायेगा।
28.	**क्या पलास से गर्मी की फसल परिपक्व होने पर फसल की कटाई जून–जुलाई में किया जा सकता है?** नहीं, क्योंकि i) कटाई के पश्चात आने वाली नई टहनियाँ बहुत छोटी–छोटी निकलेंगी जो न तो अक्टूबर/नवम्बर में कीटों के बैठने के लिये उपयुक्त है और न ही एक वर्ष पश्चात जून-जुलाई माह में ii) कटाई के समय यदि टहनी का सिरा थोड़ा भी फट गया तो वर्षा ऋतु में पानी का रिसाव होगा और फफूंद लगने के कारण टहनियाँ सूखने का डर हमेशा बना रहेगा iii) जून-जुलाई से अक्टूबर/नवम्बर की फसल सिर्फ 4 माह की होती है जिससे जुलाई में काटी गयी फसल की तुलना में 4-5 गुना उत्पादन अधिक मिल सकता है। अत: जुलाई में फसल काटना उचित नहीं है।
29.	**यदि पलास वृक्ष पर जून/जुलाई माह में आवश्यकता से अधिक लाख है तो क्या आशिंक कटाई की जा सकती है?** हाँ, किया जा सकता है। कटाई सिकेटियर से करनी चाहिये और प्राप्त बीहन लाख को उसी वृक्ष पर दूसरे स्थान में जहाँ के आगे की टहनियां खाली हो वहाँ या दूसरे वृक्ष पर लगा देना चाहिये।
30.	**पलास से अक्टूबर/नवम्बर में गीष्मकालीन (बैसाखी) फसल परिपक्व होने के समय सम्पूर्ण फसल कटाई करना चाहिये या नहीं?** नहीं, क्योंकि सम्पूर्ण फसल कटाई का तात्पर्य है कि पोषक वृक्षों की काट–छाँट, जो पलास के लिये अनुकूल समय नहीं है अत: फसल कटाई के ऊपरान्त मौसम में ठंड होने के कारण नयी टहनियाँ बहुत छोटी–छोटी निकलेंगी जो लाख कीट पालन के लिये बिल्कुल उपयुक्त नहीं है।
31.	**पलास से अक्टूबर/नवम्बर माह में फसल कटाई करते समय पत्तों की डंडियों (वृन्त) पर भी लाख कीट जीवित अवस्था में मिलते हैं क्या इन्हे बीहन लाख के रूप में उपयोग कर सकते हैं?** जी हाँ। इसमें से भी काफी संख्या में लाख शिशु कीट निकलेंगे।
32.	**पलास और बेर वृक्षों के साथ कौन से लाख पोषक वृक्ष पर बीहन लाख का उत्पादन अधिक और नियमित कर सकते हैं?**

	बट परिवार के वृक्ष जैसे पीपल, पोढ़ो, पुटकल या रेन ट्री इत्यादि पर ग्रीष्म कालीन (बैसाखी) फसल सामान्यत: नहीं मरती। अत: इनको बीहन सरंक्षण हेतु उपयोग कर सकते हैं। इससे बीहन की कमी की समस्या का भी समाधान हो जायेगा।
33.	**वट परिवार के वृक्षों जैसे पोढ़ो (*फाइकस कुनिया*) इत्यादि को शीघ्र कैसे बढायेंगे?** इस वृक्ष की 6-7 फीट लम्बी मोटी डाली को काटकर 2-3 फीट जमीन के नीचे अप्रैल या मई माह में गाड़ देना चाहिये तथा खुले सिरे के ऊपर ताजा गोबर लगा देना चाहिये। कभी कभी पानी डालना न भूलें। 4-5 वर्ष पश्चात यह वृक्ष लाख लगाने योग्य हो जायेगा।
34.	**काफी बड़े क्षेत्र में पलास पर लाख की खेती करके बीहन और कच्ची लाख का उत्पादन कर रहे हैं। अतिरिक्त लाख का उत्पादन कैसे बढ़ायें?** सामान्यत: पलास का वृक्ष बीहन उत्पादन के लिये अधिक उपयुक्त है लेकिन इस उत्पादित बीहन का उपयोग भरपूर हो, इसके लिये बेर वृक्ष काफी संख्या में लगाना चाहिये। इन वृक्षों पर अक्टूबर/नवम्बर में लाख लगाकर तेज गर्मी आने के पहले मई माह में सम्पूर्ण फसल कटाई इस प्रकार से करें कि वृक्षों की काट–छाँट भी हो जाये।
35.	**हमारे यहाँ धान एक प्रमुख फसल है साथ में काफी संख्या में पलास वृक्ष हैं जिस पर लाख की खेती की जाती है लेकिन जून–जुलाई और नवम्बर में क्रमश: धान की बुआई और कटाई का समय एवं लाख खेती की प्रक्रियायें साथ होने के कारण मजदूरों की कमी हो जाती है। इस समस्या का समाधान कैसे कर सकते हैं?** (क) लाख खेती में उपयोग होने वाले आधुनिक यन्त्रो का उपयोग करें इससे कम मजदूरों से ही कार्य शीघ्र हो जायेगा (ख) पलास पेड़ में आखिरी सप्ताह तक नया कोपल आने से पहले 70-75 प्रतिशत कच्ची फसल काट कर बाजार में बेच दें तथा 20 प्रतिशत जून-जुलाई में बीहन के लिये छोड़ दें तथा (ग) जून–जुलाई में अधिकतर वृक्षों पर स्वं-संचारण होने दें। इन तीनों विधियों को अपनाने से श्रम कम लगेगा तथा इन महीनों में मजदूरों की कमी से होने वाली परेशानी से बचा जा सकेगा।
36.	**कभी–कभी लगाातार 5-6 वर्ष तक लाख खेती करने से उत्पादन एकाएक कम**

	हो जाता है या लाख कीट ही काफी संख्या में मर जाते है इसे कैसे रोका जा सकता है? सामान्यत: लगातार एक ही वृक्ष पर लाख कीट पालन से यह समस्या आती है। एक तो वृक्षों की उत्पादन क्षमता कम हो जाती है दूसरी शत्रु कीटों की जनसंख्या इतनी बढ़ जाती है कि लाख कीट नष्ट हो जाते हैं अत: इस समस्या के लिये वृक्षों को विश्राम देना होता है (कुछ महीनों के लिये पेड़ों पर थोड़ा भी लाख कीट न हो)। पलास के कुल वृक्षों को तीन खण्ड (वृक्षों की संख्या लगभग बराबर) में बाँटते हैं। दो अच्छे वृक्षों के खण्ड को एक वर्ष के अन्तराल पर बीहन उत्पादन के लिये उपयोग करते हैं तथा तीसरे खण्ड के वृक्षों के खण्ड को एक वर्ष के अन्तराल पर बीहन उत्पादन के लिये उपयोग करते हैं तथा तीसरे खण्ड के वृक्षों को प्रति वर्ष कच्ची लाख उत्पादन हेतु उपयोग करते हैं बीहन उत्पादन हेतु दो में से एक खण्ड के वृक्ष पर अक्टूबर/नवम्बर में लाख लगाकर एक वर्ष पश्चात बीहन की कटाई करते हैं। प्राप्त बीहन को दूसरे बीहन खण्ड में तथा तीसरे खण्ड में लगातें हैं। इस प्रकार फसल कटाई और संचारण के बीच वृक्षों को 6 माह का विश्राम मिल जाता है। बीहन खण्ड के वृक्षों पर बीहन लाख की मात्रा काफी कम, करीब 10-12 ग्राम प्रति मी. नर्म टहनी (करीब 400-500 ग्राम प्रति औसत आकार के वृक्ष की दर से) अरी खण्ड में 20–25 ग्राम प्रति मीटर टहनी (1-1.5 कि.ग्रा. प्रति औसत आकार के वृक्ष) की दर से लगायेंगे। पलास के साथ बेर होने पर बेर से कच्ची फसल लेने के लिये अक्टूबर/नवम्बर में इसी 20-25 ग्राम प्रति मीटर की टहनी के दर से अक्टूबर/नवम्बर में लगाकर मई में काटेंगे। कुसुम वृक्ष का 4-5 खण्ड बनाते हैं तथा काट–छाँट के 1-1.5 साल पश्चात आंशिक कटाई तथा पुन: छ: माह पश्चात सम्पूर्ण कटाई करने के साथ ही काट–छाँट की प्रक्रिया सम्पन्न हो जायेगी। बेर पर कुसमी फसल के लिये इसी दर से कुसमी बीहन जुलाई–अगस्त में लगाते हैं।
37.	**क्या बेर वृक्ष के बीहन को पलास पर और पलास का बेर पर या रेन ट्री का बीहन पलास पर एवं इसके विपरीत या पीपल का पलास अथवा रेन ट्री इत्यादि पर लगा सकते हैं?** यदि सभी रंगीनी लाख है तो ऐसा किया जा सकता है। सच तो यह है कि पोषक वृक्ष बदलने से न तो कीट बदलता है और न तो लाख का प्रकार

	बल्कि पोषक वृक्ष बदलते रहने से उत्पादन अधिक होता है तथा स्थिरता बनी रहती है।
38.	**हमारे क्षेत्र में सिर्फ बेर के लाख पोषक हैं क्या इस पर लाख कीट पालन किया जा सकता है यदि हाँ तो कैसे?** वैसे तो बेर वृक्ष कुसमी लाख की शीतकालीन फसल के लिये काफी उपयुक्त है जिस पर कीट संचारण जून/जुलाई में करके फरवरी तक फसल की कटाई बीहन लाख के रूप में कर ली जाती है। इसी प्रकार रंगीनी लाख की ग्रीष्मकालीन फसल तेज गर्मी आने से पहले मई माह में काट ली जाती है। (अक्टूबर/नवम्बर से मई) लेकिन कुसमी लाख की ग्रीष्मकालीन फसल और रंगीनी लाख के लिये तेज गर्मी का माह जून इसके लिये उपयुक्त नहीं है। अत: बेर वृक्षों का उपयोग सामान्यत: दूसरे पोषक वृक्षों के साथ ही करते हैं। फिर भी ऐसे स्थानों में जहाँ का तापमान गर्मी के दिनों में 40^{0} से. से ऊपर नहीं जाता वहाँ सिर्फ बेर पर ही लाख कीट पालन किया जा सकता है। कुसमी लाख के लिये मई/जून में काट छाँट किये गये वृक्षों पर जनवरी/फरवरी माह में कम बीहन चढ़ाकर दूर–दूर कीट बैठाना चाहिये और जून/जुलाई या अगस्त माह में स्वं–संचारण के लिये छोड़ना चाहिये जिससे अगले वर्ष जनवरी/फरवरी में पूरी फसल काट सकते हैं। यदि मई/जून में किसी दिन का तापमान 45^{0} से. से ऊपर पहुँच जाये तो सूर्यास्त के पश्चात शाम को वृक्षों पर पानी का छिड़काव कर देना चाहिये। इस प्रकार कुल वृक्षों को दो खण्ड में बांट कर पारी–पारी से कुसमी लाख कीट पालन किया जा सकता है। इसी प्रकार रंगीनी लाख फसल की पूरी कटाई मई में न करके करीब 15 प्रतिशत पेड़ पर छोड़ दें जो जून/जुलाई में स्वं–संचारण हेतु बीहन लाख का कार्य करेगा। मई में फसल कटाई नये कोपल आने से पहले करना चाहिये। अक्टूबर/नवम्बर में बीहन काट कर छुट–पुट लाख पुन: संचारण के लिये छोड़ दें तथा अगले मई में पुन: पेड़ों की सम्पूर्ण काट-छाँट कर देना चाहिये।
39.	**किस फसल हेतु बेर का वृक्ष सबसे उपयोगी है?** मई में कटने वाली रंगीनी लाख की ग्रीष्मकालीन फसल (बैसाखी अरी) और कुसमी लाख की शीतकालीन फसल के लिये उपयुक्त है। यदि रंगीनी कई वर्ष से मर रही हो तो वर्षा ऋतु की फसल ले सकते हैं (अक्टूबर/नवम्बर से जून/जुलाई)।

40.	**बेर पोषक वृक्ष पर लाख खेती करना क्यों अधिक लाभधायक है?** दूसरे वृक्षों की तुलना में उत्पादन अधिक होता है। बेर वृक्ष की काट-छाँट का समय रंगीनी बैसाखी अरी फसल कटाई का समय एक साथ होता है। कुसुम वृक्ष की तुलना में बेर वृक्ष शीतकालीन बीहन फसल के लिये अधिक उपयोगी है कुसमी लाख का उत्पादन लागत की तुलना में 10-15 गुना हो जाता है तथा वृक्षों का पुन: कीट संचारण सिर्फ 6 माह में हो जाता है जबकि कुसुम में यह समय 1.5 वर्ष पश्चात ही होता है।
41.	**बेर पर कुसमी लाख कीट पालन की तकनीक संक्षिप्त में बतायें?** यह काफी आसान है। सर्वप्रथम वृक्षों को फरवरी के आस पास काट-छाँट करते हैं 6 माह पश्चात जुलाई या अगस्त में कीट संचारण 20-25 ग्राम बीहन प्रति मीटर नर्म टहनी की दर से करेंगे तथा अगले वर्ष जनवरी/फरवरी में पूरी बीहन लाख की कटाई कर लेगें उसी समय इसकी काट छाँट भी हो जायेगी। प्राप्त बीहन आवश्यकतानुसार कुसुम वृक्ष पर भी बीहन के रूप में प्रयोग कर लेगें। आवश्यकता से अधिक पैदावार होने पर बेच भी सकते हैं। कुसुम से तैयार बीहन लाख पुन: जुलाई या अगस्त में लगा सकते हैं।
42.	**बेर वृक्ष में कुसमी लाख खेती अच्छे होने के बावजुद काफी लोग रंगीनी लाख ही लगाते हैं इसके क्या कारण हैं?** इसके कई कारण हैं (i) काफी लोगों को जानकारी ही नहीं है कि बेर पर कुसमी लाख कीट पालन किया जा सकता है (ii) बेर के साथ कुसुम का वृक्ष भी होना चाहिये जिससे गर्मी की फसल इस वृक्ष पर लिया जा सके (iii) काफी लोग नवम्बर या दिसम्बर माह में ही चोरी की डर से या धन की आवश्यकता होने के कारण कच्ची लाह की कटाई कर लेते हैं। (iv) कुसमी बीहन लाख का दाम रंगीनी की तुलना में करीब 2-3 गुणा (रूपया 100-200 प्रति कि.ग्रा.) होने के कारण निर्धन कृषक इसे खरीदने में असमर्थ होते हैं।
43.	**काफी लोग बेर/कुसुम वृक्ष से लाख फसल की कटाई परिपक्व होने से पहले नवम्बर-दिसम्बर में ही कर लेते हैं इन्हें क्या सावधानियां लेनी चाहिये?** बेर और कुसुम वृक्ष की कटाई का समय नवम्बर/दिसम्बर उपयुक्त नहीं हैं। कुसुम वृक्ष में तो विशेष रूप से। अत: उन्हीं टहनियों को काटें जिस पर लाख पपड़ी हो। पूरे वृक्ष को सही समय यानि बेर को फरवरी के दूसरे पखवाड़े मे ही काट छाँट करें एवं लाख खेती के लिये तैयार करें।

44.	**हमनें बेर वृक्ष पर रंगीनी लाख अक्टूबर माह में, काट-छांट के बाद मई में लगाया था लेकिन फरवरी तक पूरा कीट मर गया। क्या वृक्ष की इसी समय फरवरी में काट-छाँट करके इस पर कुसमी लाख चढ़ा सकते हैं?** हां, फरवरी में काट-छाँट करके जुलाई माह में रंगीनी या कुसमी कोई भी लाख लगा सकते हैं। निर्भर करता है कि बेर के साथ और कौन सा वृक्ष है पलास या कुसुम।
45.	**हमने बेर वृक्ष पर पलास का बीहन चढ़ाया था परिपक्व होने पर क्या बेर की कटी लाख कुसुम पर चढ़ा सकते हैं?** नहीं, ऐसा नहीं कर सकते हैं क्योकि पलास की लाख रंगीनी है जिसे कुसुम पर नहीं चढ़ाया जा सकता है।
46.	**हमने बेर वृक्ष पर कुसुम वृक्ष से काटी बीहन चढाया था। परिपक्व होने पर क्या बेर से काटी बीहन लाख पलास पर लगा सकते हैं ?** नहीं। क्योंकि बेर से काटी गयी लाख कुसमी है जो पलास पर आसानी से नहीं पाला जा सकता है। वृक्ष बदलने से कीट का प्रकार नहीं बदला जा सकता।
47.	**क्या बेर या अन्य किसी पोषक वृक्ष पर जुलाई माह में रंगीनी और कुसमी दोनों बीहन एक ही वृक्ष पर लगाये जा सकते हैं?** नहीं। क्योंकि दोनों से एक ही समय में नर वयस्क कीट का निर्गमन होगा और रंगीनी का नर कुसमी के मादा से तथा कुसमी नर, रंगीनी मादा से प्रजनन करेंगे। फलस्वरूप परिपक्वता के समय कुछ शिशु कीट अक्टूबर-नवम्बर के आस पास रंगीनी चक्र के अनुसार तथा कुछ कुसमी चक्र के अनुसार जनवरी-फरवरी में निकलेंगे। इस प्रकार के उत्पाद को बीहन लाख के रूप में उपयोग करना कठिन हो जाता है।
48.	**बेर वृक्ष पर लगी ग्रीष्मकालीन लाख फसल को कैसे अधिक तापमान से बचायेंगे?** बचाने के लिये (i) फरवरी माह में लगे वृक्षों की आशिंक काट-छाँट (ii) पानी का छिड़काव (iii) सिचांई करके, किया जा सकता है।
49.	**क्या बेर पर रंगीनी लाख का कुछ भाग मई में छोड़कर जुलाई माह में बीहन के रूप में लिया जा सकता है?** हां, किया जा सकता है।

50.	**बेर वृक्षों का उपयोग ग्रीष्मकालीन कुसमी फसल हेतु करने से क्या हानियां हैं?** मई–जून माह में पतझड़ होने से बेर की सारी पत्तियाँ झड़ जाती है जिससे लाख कीटों के ऊपर धूप सीधी पड़ती है जिसके कारण लाख कीट को बचाना काफी कठिन हो जाता है।
51.	**बेर वृक्ष का उपयोग वर्षाकालीन रंगीनी फसल हेतु उपयोग करने से क्या हानियां हैं?** वर्षाकालीन रंगीनी फसल सिर्फ 4 माह की होती है जिससे उत्पादन कम होगा। अत: इस पोषक वृक्ष का उपयोग लम्बी अवधि की फसल की लिये प्रयोग करने पर अधिक लाभ होगा। इसके अतिरिक्त फसल कटाई के समय (जुलाई), बेर वृक्षों की कटाई छँटाई के समय से बिल्कुल मेल नहीं खाता जिसके कारण नई टहनियां बहुत छोटीं–छोटी निकलेंगी।
52.	**वर्षाकालीन कुसमी लाख फसल उत्पादन के लिये कुसुम के स्थान पर बेर को प्राथमिकता क्यों दी जाती है?** लाख कीट को वर्षा ऋतु में हवा का आवागमन प्रचुर मात्रा में चाहिये ताकि लाख कीट द्वारा निकाले जा रहा मधुरस सूखता रहे एवं फंफूद का विकास न हो जो कि लाख कीट के लिये हानिप्रद होता है। कुसुम वृक्ष काफी घना होता है जबकि बेर में हवा का आवागमन अच्छा हो जाता है। अत: बेर पर वर्षाकालीन कुसमी फसल का उत्पादन अच्छा होता है।
53.	**क्या बेर टहनियों पर कँाटे होने से लाख खेती की प्रकिया में कोई कठिनाई होती है?** नहीं, क्योंकि कँाटो को चाकू या अन्य यन्त्रों से हटा दिया जाता है जिससे काट–छाँट, फसल कटाई इत्यादि के लिये उचित स्थान तक पहुंचा जा सके। इसी प्रकार खुरचने के लिये भी कोई समस्या नहीं रहती है।
54.	**हमारे क्षेत्र में काफी संख्या में कुसुम वृक्ष उपलब्ध हैं। इस पर सही तरीके से लाख की खेती कैसे करें?** कुल वृक्षों को 4 या 5 खण्डों में बराबर संख्या में बांट लें। एक चौथाई या पांचवे भाग को जनवरी-फरवरी या जून/जुलाई में काट–छँाट कर लें। उतने ही पेड़ हर खण्ड के छ: माह के पश्चात काट–छँाट करें। प्रत्येक खंण्ड के वृक्षों की काट–छँाट के 18 माह पश्चात कीट संचारण करें। कीट संचारण 20 ग्राम बीहन प्रति मीटर नर्म टहनी की दर से करें। संचारण के 6 माह पश्चात

	परिपक्व बीहन लाख की आशिंक कटाई करें तथा प्राप्त बीहन को दूसरे खण्ड के वृक्षों पर कीट संचारण के लिये उपयोग करें। आशिंक कटाई के छः माह पश्चात सम्पूर्ण फसल कटाई इस प्रकार से करें कि साथ में वृक्ष की काट–छाँट भी हो जाये। इस प्रकार आशिंक फसल कटाई से प्राप्त बीहन दूसरे खण्ड के वृक्षों पर कीट संचारण हेतु तथा सम्पूर्ण कटाई से प्राप्त बीहन को बाजार में बेचें।
55.	**कुसुम पर लाख कीट पालन प्रारम्भ करने से पहले क्या सावधानियां लेनी चाहिये?** कुसुम वृक्ष सामान्यतः दो प्रकार का होता है। सफेद और काली डाल वाला। अधिकतर काला कुसुम ही लाख खेती के लिये उपयोगी है इसलिये पहले थोड़ा–थोड़ा कीट संचारण करके वृक्षों का चयन कर लेना चाहिये। यह कार्य वृक्ष के एक भाग में लाख लगााकर 1–2 वर्ष तक देख लेना चाहिये तत्पश्चात पूर्ण रूप से खेती करना करना चाहिये।
56.	**स्वयं–संचारण (**80 प्रतिशत **फसल काटकर** 20 प्रतिशत **को स्वयं संचारण हेतु प्रत्येक वर्ष छोड़ना) की तकनीक क्यों नहीं अपनाना चाहिये ?** सामान्यतः स्वयं कीट संचारण एक ही बार करना चाहिये। लगातार करने से कई हानियां होती हैं (i) वृक्षों को विश्राम न मिलने से नियमित उत्पादन नहीं होता। (ii) लाख के शत्रु कीटों की जनसंख्या बढ़ जाती है जिससे उत्पादन कम हो जाता है। और (iii) बीहन लाख की गुणवत्ता खराब हो जाती है।
57.	**कुसमी लाख उत्पादन हेतु देखा गया है कि प्रत्येक 3-4 वर्ष बाद फसल पूरी तरह नष्ट हो जाती है। इसका क्या कारण है एवं इसे कैसे रोका जा सकता है?** इसके लिये वैज्ञानिक विधि से लाख खेती करना चाहिये। मुख्य रूप से (i) कीट सचांरण के पूर्व वृक्षों की काट छाँट (ii) पोषक वृक्षों को दो फसलों के बीच कुछ महीनों का विश्राम देना (iii) शत्रु कीटों का प्रबन्धन–बीहन लाख को 60 मेश नाईलॉन जाली के थैले में भरकर कीट संचारण करना, कीटनाशक एवं फफूंदनाशक का सही तरह से उपयोग करके शत्रु कीटों को नियंत्रित करना (iv) आने वाले मौसम के अनुसार वृक्षों का चयन करके कीट–संचारण करना इत्यादि।
58.	**नियमित कुसमी बीहन लाख की कमी से कैसे छुटकारा पाया जा सकता है?**

	निम्नलिखित प्रक्रियायें अपनाई जा सकती हैं (i) वैज्ञानिक तरीके से लाख की खेती (ii) नवम्बर–दिसम्बर में कच्ची लाख की कटाई न करना (iii) ठीक समय पर उपचार करके शत्रु कीटों की रोकथाम (iv) शीतकालीन फसल के लिये बेर/खैर जैसे दूसरे पोषक वृक्षों का उपयोग।
59.	**किसी कुसुम वृक्ष से सम्पूर्ण फसल के कितने माह पश्चात पुन: कीट संचारण कर सकते हैं?** सामान्यत: 18 माह पश्चात लेकिन कभी–कभी नर्म टहनी देखकर 12 माह पश्चात भी कर सकते हैं।
60.	**रंगीनी लाख की तुलना में कुसमी लाख की खेती क्यों अधिक लाभप्रद है?** कुसमी लाख से अधिक उत्पादन (प्रति कीट लाख की अधिक मात्रा एवं कीटों का नजदीक बैठना), अच्छी गुणवत्ता, अपरिष्कृत लाख से अधिक राल प्राप्त करना इत्यादि। यही कारण है कि इसकी खेती अधिक लाभप्रद है।
61.	**क्या कारण है कि अधिक लाभप्रद होने के कारण भी अधिक लोग रंगीनी लाख की खेती ही करते हैं?** क्योंकि लाख की खेती अधिकतर गरीब लोगों के द्वारा ही किया जाता है और उनमें खतरा लेने की क्षमता में कमी एवं पूंजी की कमी (कुसमी बीहन का दाम अधिक होने के कारण) और पोषक वृक्षों की कमी इत्यादि के कारण कुसमी लाख की खेती कम ही लोग करते हैं।
62.	**शीतकाल में कुसुम वृक्ष पर कुसमी लाख का उत्पादन कम क्यों होता है?** कुसुम वृक्ष काफी घना होता है जिसके कारण लाख कीट द्वारा निकाला गया मधुरस, हवा कम या न मिलने से सूखने नहीं पाता। फलस्वरूप मधुरस पर फंफूद का विकास होने से लाख कीट मरने लगते हैं और उत्पादन कम हो जाता है।
63.	**शीतकालीन कुसमी लाख को फफूंद के आक्रमण से कैसे रोककर अच्छी फसल ले सकते हैं?** फफूंदनाशक कारबेण्डाजिम (50 प्रतिशत डब्लू. पी.) का 15 दिनों के अन्तराल पर लाख लगी टहनियों के ऊपर छिड़काव से फफूंद का आक्रमण नहीं हो पाता और फसल अच्छी होती है।
64.	**कभी–कभी शीतकालीन कुसमी फसल से जनवरी–फरवरी के बजाय अक्टूबर–नवम्बर में शिशु कीट निर्गमन होने लगता है ऐसी परिस्थिति में क्या**

	फसल काट लेना चाहिये? नहीं। अधिक शिशु कीट निर्गमन की प्रतीक्षा करनी चाहिये जो सामान्यत: जनवरी-फरवरी के बीच होता है यदि शिशु कीट अधिक निकल रहें हो तब काट कर बीहन लाख के रूप में उपयोग कर सकते हैं।
65.	**शीतकालीन कुसमी लाख से अक्टूबर-नवम्बर में समय से पहले निकलने वाले कीट क्या आगे चलकर जीवित रहेंगे?** हां, ये शिशु कीट बैठेंगे और जीवित भी रहेंगे लेकिन जब इनके निकलने का सही समय जनवरी-फरवरी आयेगा तब फसल कटाई के समय समाप्त हो जायेंगे ।
66.	**कुसुम वृक्ष पर पल रहे लाख को गर्मी के दिनों में अधिक तापमान से तथा वर्षा या शीतकाल में कोहरे (कुहासा) से कैसे बचायेंगे?** ग्रीष्मकालीन फसल हेतु जनवरी-फरवरी में कीट संचारण के समय बीहन लाख की डंडियॉ को वृक्ष के नीचे और भीतर की डालियों पर इस प्रकार से बांधना चाहिये कि शिशु कीट पर सीधा धूप न पड़े, बाहर एवं ऊपर की डालियां खाली रहे। यदि कभी दिन का तापमान 46^{0} से. से अधिक हो जाये तब उस दिन शाम के समय वृक्षों पर पानी छिड़काव कर देना चाहिये। इसी प्रकार शीतकालीन फसल के लिये कीट सचांरण करते समय बीहन लाख बाहर-बाहर की नर्म टहनियों पर बॉधें जिससे हवा से मधुरस सूखता रहे।
67.	**क्या कुसमी लाख खेती हेतु बेर वृक्षों का उपयोग अदल बदल कर किया जा सकता है?** हां, कुसुम-बेर या कुसुम-सेमियालता इत्यादि का समन्वय कर सकते हैं।
68.	**सामान्यत: कुसुम वृक्ष पर शीतकालीन फसल (जनवरी-फरवरी से जून-जुलाई) लगाना उचित नहीं रहता। दूसरे कौन से पोषक वृक्ष हैं जिस पर इस फसल को लेना उचित होगा?** बेर वृक्ष इसके लिये अति उत्तम है कीट संचारण जुलाई-अगस्त में किया जाता है। संचारण के 5-6 माह पूर्व फरवरी माह में इसकी काट छाँट करनी चाहिये। इसके अतिरिक्त कन्डयूर (*प्रोटियम सिरेटम*) का भी उपयोग कर सकते हैं।
69.	**कुसुम वृक्ष से शीतकालीन फसल जनवरी-फरवरी के बजाय अपरिपक्व फसल अक्टूबर-नवम्बर में ही काट लेना क्यों हानिकारक है?**

	अधिकतर क्षेत्रों में अक्टूबर–नवम्बर का माह काट छाँट के लिये उचित नहीं है। अत: इस प्रक्रिया को इस समय करने पर नई टहनियाँ बहुत ही छोटी–छोटी निकलेंगी जिसमें विकास नहीं होगा फलस्वरूप पुन: संचारण हेतु नई टहनियाँ अच्छी नहीं मिलेंगी।
70.	**मेरे यहां काफी क्षेत्र बन्जर है। क्या इस पर लाख पोषक वृक्ष लगााकर खेती की जा सकती है। कौन से वृक्ष लगायें कि शीघ्र से शीघ्र लाख खेती आरम्भ की जा सके?** सेमियालता *(फ्लेमिजिंया सेमियालता)* एक ऐसा पौधा है। जिसे लगाने के 1–2 वर्ष पश्चात ही इस पर लाख कीट छोड़ा जा सकता है। 5-6 फीट उंचाई के इस पौधे से 5–10 सीधी टहनियाँ निकलती हैं। यह पौधा शीतकालीन कुसमी फसल (जून–जुलाई से जनवरी–फरवरी) के लिये काफी उपयुक्त है लेकिन इसके लिये दिसम्बर के आस-पास 2–3 बार सिंचाई की आवश्यकता होती है।
71.	**इस पौधे का बगान कैसे तैयार कर सकते हैं?** इस पौधे से फरवरी के आस-पास बीज एकत्रित करते हैं। मार्च–अप्रैल माह में बीज पोलीथीन थैली में लगाते हैं तथा जुलाई–अगस्त में पहले से बने एवं गोबर खाद दिये हुये गड्ढे में पौधे लगा देते हैं क्योंकि यह पौधा दलहन परिवार का है अत: यह हवा की नाइट्रोजन को भी मिट्टी में निर्धारण करता है। एक दो साल तक खर पतवार भी हटाना पड़ेगा।
72.	**इस पौधे की विशेष बात क्या है?** इस पर लाख की खेती सिर्फ दूसरे वर्ष ही प्रारम्भ कर सकते हैं, बंजर भूमि का उपयोग, बिना वृक्षों पर चढ़े लाख की खेती, पुन: कीट संचारण की प्रक्रिया फसल कटाई के सिर्फ 6 माह पश्चात (कुसुम वृक्ष को 18 माह पश्चात) प्रारम्भ कर सकते हैं ।
73.	**क्या इस पौधे की कुछ कमियाँ भी हैं?** हाँ। इसे मवेशिययों से बचाने के लिये कुछ प्रबन्ध करना पड़ेगा। छोटे पौधे होने के कारण लाख की चोरी आसान है। इस पौधे पर थोड़ा सा भी अधिक लाख लगाने से पौधे के मरने की सम्भावनायें अधिक होती हैं। इस पौधे के साथ कुछ दूसरे पौधे जैसे गलवांग *(एलबीजिया ल्यूसिडा)* या कुसुम जैसे वृक्षों की आवश्यकता होती है जिस पर ग्रीष्मकालीन कुसमी लाख की खेती की जा सके।

74.	**इन पौधे पर लाख खेती करने की वैज्ञानिक विधि क्या है?** सर्वप्रथम इन पौधों पर कीट संचारण जुलाई माह में पेड़ लगाने के पश्चात करेंगे। तत्पश्चात फसल कटाई और पेड़ों की काट-छाँट एक साथ हो जायेगी। प्रति पेड़ करीब 50 ग्राम (8-10 ग्रा. प्रति टहनी की दर से) बीहन लगाकर कीट संचारण इस प्रकार से करना चाहिये कि प्रत्येक पौधे की लगभग 60–70 प्रतिशत जगह पर लाख कीट बैठें बीहन के टुकड़े को पेड़ पर बांधने से पहले सभी शाखाओं को एक साथ बाँध देना चाहिये तत्पश्चात ही बीहन लाख की डंडी बाँधना चाहिये ताकि सभी शाखाओं पर सामान्य रूप से कीट बैठें। परिपक्व फसल की कटाई के लिए, शाखाओं को जमीन से 3-4 इंच ऊपर काटें साथ में ऐसी टहनियाँ भी इसी की भांति काटें जिस पर लाख कीट नहीं हैं।
75.	**इस पौधे पर लाख के खेती के लिये कौन सी सावधनियां लेनी चाहिये?** (i) संचारण से पहले प्रत्येक पौधे में 5-6 टहनियों (शाखायें) से अधिक नहीं होनी चाहिये यदि हो तो काट कर हटा दें (ii) कीट संचारण इस प्रकार से करें कि प्रत्येक टहनी पर 40-50 से.मी. लम्बाई से अधिक लाख कीट न बैठें (iii) लाख कीट, टहनी पर जमीन से करीब 15 से.मी. ऊपर ही हो (iv) अगस्त–सितम्बर के आस पास नीचे की कुछ पत्तियां तोड़ दें जिससे विकसित लाख कीट को हवा अधिक मिले और निकलने वाला मधुरस सूखता रहे (v) पौधे के आस-पास पानी न जमा हो (vi) सही समय पर उचित दवा का छिड़काव अवश्य करें।
76.	**लाख कीट लगाने के पश्चात कौन सी दवा कब छिड़कनी चाहिये?** इथोफेनप्राक्स 0.02 प्रतिशत (2 मि.ली. प्रति ली), कीट संचारण के 25 दिन के पश्चात छिड़काव करने से तीनों प्रकार के शत्रु कीट (सफेद तितली, काली तितली और हरा पतंगा) की रोकथाम हो जाती है। वर्षा ऋतु होने के कारण इसी घोल मे कारबेण्डाजिम 0.01 प्रतिशत (3 ग्राम प्रति 15 लीटर पानी) भी मिला देना चाहिये जिससे फफूंद के आक्रमण होने की सम्भावना न रहे। यदि हरे पतंगो का आक्रमण हो गया तब 35-38 दिन के बीच इसी घोल का पुन: छिड़काव कर देना उचित है। लेकिन कभी भी 42-58 दिन के बीच दवा का छिड़काव नहीं करना चाहिये अन्यथा नर वयस्क कीट मर जायेंगे। यदि आवश्यकता पड़े तो तीसरा छिड़काव इसी दवा का कर सकते हैं छिड़काव लाख लगी टहनियों पर करना है न कि पत्तियों पर।

77.	**एक हेक्टेयर से कितना उत्पाादन हो सकता है?** यदि पौधों को 1 X 1 मी. की दूरी पर लगाया गया है तो इसमें करीब 10,000 पौधे लगेंगे। जिस पर 200-250 ग्राम प्रति पौधे से औसतन उत्पादन करके करीब 2000–2500 कि.ग्रा. लाख का उत्पादन किया जा सकता है।
78.	**इस पौधे से उत्पादित लाख की गुणवता कैसी होती है?** इसकी गुणवता कुसमी लाख के बराबर ही होती है।
79.	**गलवांग वृक्ष को लाख खेती के लिये उपयोग करने से क्या-क्या लाभ है और इसको कैसे तैयार करेंगे?** (i) गलवांग एक हरा-भरा रहने वाला वृक्ष है और ग्रीष्मकालीन फसल के लिये अति उपयोगी है (ii) वृक्षारोपण के 4-5 वर्ष बाद ही लाख खेती के लिए तैयार हो जाता है (iii) इसको झाड़ीनुमा पौधे मे परिवर्तित करना आसान है। (iv) जिससे पौधे घने और नर्म टहनियाँ अधिक संख्या में मिलेंगी। ऊंचाई कम होने के कारण लाख खेती की प्रक्रिया से निपटना आसान है और (v) फसल कटाई के पश्चात दूसरी फसल पुन: 6 माह पश्चात लगा सकते हैं जबकि कुसुम पर 18 माह लगते हैं।
80.	**गलवांग के पौधे कैसे लगा सकते हैं?** सेमियालता की भांति नर्सरी में बीज लगाकर या पॉलीथीन बैग में बीज लगाकर मानसून के पहले, पौधे को निश्चित दूरी पर लगा देते हैं। लगाने के 4-5 वर्ष पश्चात जनवरी/फरवरी में बीहन चढ़ा सकते हैं।
81.	**क्या कुसमी और रंगीनी लाख का उत्पादन एक ही क्षेत्र में आस-पास किया जा सकता है?** उत्पादन तो किया जा सकता है परन्तु ऐसा करने से बचना चाहिये क्योंकि शत्रु कीटों का एक फसल से दूसरी फसल पर स्थानान्तरण आसानी से हो जायेगा। फलस्वरूप इनकी जनसंख्या में एकाएक वृद्धि हो जायेगी और उत्पादन कम होने के साथ-साथ उत्पादित बीहन लाख की गुणवता भी अच्छी नहीं होगी।
82.	**अच्छे बीहन लाख की पहचान कैसे करेंगे?** अच्छे बीहन लाख में लाख के कीट जीवित होने चाहिये इसको देखने के लिये लाख पपड़ी को दो अंगुलियों के बीच दबाने से गाढ़े लाल रंग का खून, द्रव अवस्था में होना चाहिये। पपड़ी के ऊपर मोम दिखना चाहिये। लाख पपड़ी

	लगातार मोटी एवं मादा कीट बड़े होने चाहिये। शत्रु कीटों की संख्या कम से कम होनी चाहिये इत्यादि।
83.	**बीहन लाख से कितने दिनों तक शिशु कीट निकलता है?** यह लाख फसल और मौसम पर निर्भर करता है सामान्यत: 7-20 दिनों तक निकलते हैं।
84.	**शिशु कीट बैठने की प्रक्रिया कब समाप्त हो जाती है?** सामान्यत: शिशु कीट निकल कर समाप्त होने के 3-4 दिन पश्चात।
85.	**बीहन लाख कहाँ से मिल सकता है?** सामान्यत: गांव के ऐसे हाट बाजार में जहां आस-पास लाख की खेती हो रही हो या लाख उत्पादक के पास, या वन क्षेत्रों में पेड़ों पर लाख कीट ढूँढ़ने पर। इसे बण्डल, गट्ठर या तौलकर खरीदा जा सकता है। सामान्यत: रंगीनी बीहन लाख गट्ठर या तौलकर लेकिन कुसमी तौलकर बिकता है। पेड़ों पर रंगीनी लाख की उपस्थिति आसानी से पहचानी जा सकती है। पेड़ों के पत्तों पर काले धुंआँ का पाउडर जैसा पदार्थ दिखाई पड़े तो समझना चाहिये कि इस पर लाख कीट विद्यमान है। यदि रंगीनी है तो अक्टूबर-नवम्बर या जून-जुलाई में शिशु कीट निर्गमन देखकर काट सकते हैं। पीपल, रेन ट्री इत्यादि पर लाख बहुधा दिख जाता है न मिलने पर निदेशक, भारतीय प्राकृतिक लार एवं गोंद संस्थान, नामकुम रांची- 834 010 से सम्पर्क किया जा सकता है। कुसमी लाख सामान्यत: जनवरी-फरवरी और जून-जुलाई में मिलती है।
86.	**बीहन लाख की क्या कीमत होती है?** रंगीनी लाख करीब रूपया 50-60 प्रति कि.ग्रा तथा कसुमी रू 100-150 प्रति कि.ग्रा.। कभी-कभी पलास की बीहन लाख रू 1.50 से रू 2.00 प्रति मी. लम्बी टहनियां की दर से भी उपलब्ध होता है।
87.	**क्या 50 या 100 ग्राम के बण्डल बनाने के लिये प्रत्येक बार अलग- अलग तौलना पड़ेगा?** नहीं। करीब एक कि.ग्रा. एक साथ तौल कर आवश्यकतानुसार करीब-करीब 10 या 20 बराबर भाग में बांटकर बण्डल बना लेते हैं। आवश्यक नहीं है कि 50 या 100 ग्राम बिल्कुल सही मात्रा में हो।
88.	**बहुत पहले हमारे क्षेत्र में लाख खेती होती थी लेकिन इधर कई वर्षो से बीहन न मिलने के कारण कोई नहीं करता। क्या दूसरे क्षेत्र से बीहन लाकर**

	लाख की खेती पुन: आरंभ कर सकते हैं? हाँ। अवश्य कर सकते हैं। अच्छा होगा यदि पहले थोड़ा सा बीहन का उत्पादन करें एवं अपनी आवश्यकता की पूर्ति करें। जब आपके क्षेत्र में बीहन लाख का उत्पादन भरपूर होने लगे तब कुछ वृक्षों से कच्ची लाख भी काटकर बेच सकते हैं। इसके अतिरिक्त अलग क्षेत्रों के बीहन लाख एवं पोषक वृक्ष अदल बदल कर लगायें इससे उत्पादन नियमित और स्थिर बना रहेगा।
89.	**यदि बीहन कटाई के पश्चात किसी कारणवश रखना पड़ जाये तो कैसे सुरक्षित रख सकते है?** सामान्यत: इसे खुला और फैलाकर रखना चाहिये जिससे अधिक से अधिक हवा का आवागमन होता रहे। स्थान धुआँ रहित और आग से दूर रहना चाहिये। पेड़ के नीचे छायादार स्थान (धूप से दूर) उपयुक्त रहता है। शीतकाल में गर्म स्थानों तथा ग्रीष्मकाल में ठंडे स्थानों में रखना उचित होता है।
90.	**बीहन लाख का स्थानान्तरण करने में कौन सी सावधानियां लेनी चाहिये?** नजदीक ले जाना हो तो ऐसे ही गट्ठर बना कर ले जा सकते हैं। यदि दूर ले जाना हो तो बांस की टोकरी में खड़ा करके इस प्रकार रखें कि बीहन से निकलने वाला पानी सूखता रहे। टोकरी को एक दूसरे के ऊपर कभी न रखें अन्यथा वजन के कारण नीचे की तरफ का बीहन खराब जो जायेगा। लाख पपड़ी भी डंडी से अलग हो जायेगी। बहुत अधिक दूर स्थानान्तरित करने के लिये ट्रक पर बांस का रैक लगााकर रखें जिससे हवा का आवागमन बना रहेगा।
91.	**इसके अतिरिक्त कौन सी विशेष सावधानियां लेनी चाहिये?** बीहन लाख की डडिंयों को कभी भी पॉलीथीन के थैले में नहीं भरना चाहिये क्योंकि इसमें जीवित लाख कीट उपस्थित रहते हैं और इसमें से लगातार पानी निकलता रहता है और उसका सूखना आवश्यक है अन्यथा कीट के स्वास एवं मल मूत्र के छिद्र बन्द हो जायेंगे और लाख कीट मर जायेंगे।
92.	**बीहन लाख से कितने दिनों तक शिशु कीट निर्गमन होता रहता है?** यह मौसम पर निर्भर करता है। ठंडे मौसम में अधिक दिनों तक धीरे-धीरे निकलता है जुलाई माह में सामान्यत: 7-10 दिन, अक्टूबर-नवम्बर में 15-18 दिन और जनवरी-फरवरी में 18-21 दिनों तक होता है। जब तापमान

	सामान्य से अधिक हो जाता है तब कीट निर्गमन की गति तेज हो जाती है तथा तापमान कम होने पर धीमी गति से एवं बहुत कम तापमान होने पर बन्द भी हो जाता है ।
93.	**शीत काल में कभी–कभी तापमान बहुत कम होने पर शिशु कीट निर्गमन की गति बहुत धीमी तथा कई दिनों तक चलती रहती है जिसके कारण फसल कटाई करके संचारण करने की प्रक्रिया में काफी संदेह रहता है। इस समस्या का समाधान कैसे करें?** शीत काल में वातावरण का तापमान 15° से. से कम होने पर एवं ठंडी हवा चलने के कारण शिशु कीट निर्गमन होने में विलम्ब होता है या निर्गमन ही नहीं होता। ऐसी स्थिति में शिशु कीट मादा कोष के भीतर 6-7 दिनों तक रह सकता है। तत्पश्चात यदि वातावरण का तापमान यदि थोड़ा अधिक हुआ तो निर्गमन आरम्भ हो जायेगा अन्यथा नहीं। यह स्थिति सामान्यतः कुसमी फसल परिपक्व होने के समय जनवरी–फरवरी में आती है। इस समस्या से छुटकारा पाने के लिये जैसे ही कीट निर्गमन प्रारम्भ हो फसल काट कर गर्म स्थानों में 1-2 दिन रखें। गर्मी देने हेतु इसे पुआल (पैरा) से आंशिक रूप से ढक सकते हैं। गर्मी पाकर कीट निर्गमन प्रारम्भ हो जायेगा जिसे पेड़ पर कीट संचारण हेतु चढ़ा देगें।
94.	**कभी–कभी गर्मी के दिनों में शिशु कीट निर्गमन इतना तेजी से होता है कि दूसरे वृक्षों पर चढ़ाने हेतु पर्याप्त समय नहीं मिल पाता अत: किस प्रकार से कीट निर्गमन की गति कम कर सकते है ?** शिशु कीट निर्गमन की गति कम करने के लिये बीहन लाख को ठंडे स्थानों में रखना चाहिये। गांव में ऐसा स्थान आसानी से बनाया जा सकता है। घने वृक्षों के नीचे, जमीन पर पानी का छिड़काव करके, आस–पास कपड़े भिगोकर लटकाने से ठंडक पहुचाई जा सकती है। कभी भी कपड़ा भिगोकर बीहन लाख को ढकना नहीं चाहिये क्योंकि बीहन लाख से स्वयं पानी निकलता है जिसका सूखना आवश्यक है।
95.	**कभी–कभी बीहन लाख से पपड़ी अलग हो जाती है इसको बीहन के रूप में कैसे उपयोग कर सकते हैं?** ऐसे बीहन के टुकड़ों को मच्छरदानी या 60 मेश नाईलोन जाली में या पुआल (पैरा) में लपेटकर फिर संचारण कर सकते हैं। बहुत महीन कपड़ों का

	उपयोग नहीं करना चाहिये।
96.	**अच्छी गुणवता की बीहन लाख कब प्राप्त किया जा सकता है ?** कुसमी बीहन जनवरी–फरवरी और जून–जुलाई तथा रंगीनी अक्टूबर–नवम्बर और जून–जुलाई माह में खरीदा जा सकता है।
97.	**क्या फसल पकने से पहले काट कर पुआल में ढक कर कीट निर्गमन करवाया जा सकता है?** नहीं, क्योंकि पुआल पर ढ़कने का अभिप्राय होता है कि कीट बन चुका है लेकिन बारिश या ठंड से बाहर नहीं आता। पुआल का उपयोग परिपक्व बीहन से शिशु कीट बाहर आने के लिये किया जाता है न कि अंडे से शिशु बनने की प्रक्रिया के लिये।
98.	**कभी–कभी लाख छिलाई करते समय शिशु कीट भी बाहर आते है क्या इन छिली लाख को बीहन लाख के रूप में उपयोग कर सकते है?** हाँ, कर सकते हैं। कभी–कभी लाख परिपक्व होने से थोड़ा पहले काट लिया जाता है। फलस्वरूप शिशु कीट बनने के पश्चात निकलने लगते है। इसी लाख को किसी छिद्र वाली थैली में भरकर पेड़ों पर बांध देते हैं जिनसे शिशु कीट बाहर आकर बैठ जाते हैं।
99.	**रंगीनी लाख की कतकी (वर्षाकालीन) फसल से शिशु कीट निर्गमन की सम्भावित तारीख 21 अक्टूबर है लेकिन वर्षा होने के कारण 22 से 24 अक्टूबर तक थोड़े ही शिशु कीट बाहर आये एवं लगातार बारिश के कारण कीट निर्गमन रूक गया। क्या फसल कटाई कर लेना चाहिये या फिर से कीट निर्गमन की प्रतीक्षा करनी चाहिये ?** हाँ। ऐसी स्थिति में 6-7 दिन तक प्रतीक्षा करनी चाहिये और जैसे ही वर्षा रूक जाये काटकर दूसरे पेड़ पर चढ़ाना चाहिये। वैसे भी बारिश के समय वृक्षों पर चढ़ने की सलाह नहीं दी जाती।
100.	**हमारे क्षेत्र में हमेशा ही बीहन कमी की समस्या रहती है जिसके कारण सभी वृक्षों पर बीहन नहीं चढ पाता। बीहन कमी की समस्या कैसे दूर कर सकते हैं?** वैज्ञानिक विधि से लाख की खेती करें जिसके अन्तर्गत (क) पोषक वृक्षों को विश्राम देना (ख) काट–छाँट किये हुये पेड़ों पर ही बीहन लाख चढ़ाना (ग) शत्रु कीटों का प्रबन्धन (घ) कभी भी कच्चे लाख की कटाई नहीं करना

	(च) बीहन सरंक्षण पोषक वृक्षों का उपयोग करना जैसे गर्मी के मौसम मे रंगीनी लाख पाकुड़, पीपल, पोढ़ो, *फाइकस* इत्यादि वृक्षों पर चढ़ाना। शीतकालीन कुसमी फसल के लिये बेर एवं ग्रीष्म कालीन के लिये कुसुम (छ) अपने क्षेत्रों में कुछ ऐसी जगह की पहचान कर लें जो गर्मी और जाड़े के लिये अलग-अलग उपयोग किये जा सके और इन्हे उसी फसल के लिये उपयोग करें (नये पेड़ों को मौसम की आवश्यकतानुसार ही लगायें। (ज) बीहन लाख की कटाई सही समय पर ही करें (झ) बीहन कटाई के पश्चात कीट सचांरण की प्रक्रिया में देर कभी न करें (त) बीहन को क्षति से रोकें एवं आवश्यकतानुसार ही इसका क्रय- विक्रय करें। यदि विक्रय न हो पाये तो दूसरे उत्पादक को उधार भी दे सकते हैं।
101.	**बीहन लाख उत्पादन फार्म बनाना चाहते है जिससे लगातार बीहन कमी की समस्या समाप्त की जा सके। इसके लिये क्या करना पड़ेगा?** बीहन लाख फार्म के लिये क्षेत्र का चुनाव करना एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। (i) वर्षा ऋतु में वृक्षों तक भी पहुंचा जा सके (ii) वृक्षों को एक दूसरे के नजदीक होना चाहिये। अधिक बिखरे होने से लाख खेती की प्रक्रियाओं में कठिनाई आती है (iii) नजदीक में तालाब या पानी का अन्य स्रोत होना चाहिये। रंगीनी लाख फार्म के लिये पलास के अतिरिक्त पीपल जाति या अन्य वृक्ष जो सदाबहार हो, होने से उचित होगा। इसी प्रकार कुसमी बीहन फार्म के लिये बेर अति उत्तम है जिससे इस पर शीतकालीन फसल लिया जा सके। इसी प्रकार कुसुम के अतिरिक्त गर्मी फसल के लिये गलवांग जैसे पेड़ों का होना आवश्यक है।
102.	**बीहन लाख का रोटेशन क्या है इसे कैसे करते हैं?** कभी-कभी बीहन लाख वृक्षों पर बाँधने के पश्चात इतने शिशु कीट बाहर निकलते हैं कि नर्म टहनियों पर जगह भरने के पश्चात भी निकलते रहते हैं। अत: ऐसे बीहन को वहाँ से खोलकर ऐसी जगह बाँधे जहाँ की नर्म टहनियाँ अभी खाली हो। यह प्रक्रिया उसी वृक्ष या दूसरे वृक्ष पर भी की जा सकती है। ऐसा न करने से अधिक लाख कीट बैठने से टहनियाँ सूखने की सम्भावना बनी रहती है।
103.	**क्या शत्रु कीट से क्षतिग्रस्त बीहन लाख को कीट संचारण के लिये उपयोग कर सकते है यदि हाँ तो कैसे?**

	जी हाँ। एक तो बीहन थोड़ा अधिक लगाना पड़ेगा, दूसरा बीहन लाख को 60 मेश नाइलान जाली की थैली बनाकर भर दें तथा प्लास्टिक की सुतली से मुंह बाँध दें। तत्पश्चात वृक्षों पर कीट सचांरण करें इससे शत्रु कीट भीतर ही फंसे रहेंगे और आने वाली फसल अच्छी होगी।
104.	**यदि जाली उपलब्ध नहीं हो तो शत्रु कीटों को नई फसल पर जाने से रोकने का क्या उपाय करना चाहिये?** जैसे ही बीहन लाख से शिशु कीट निकलना समाप्त हो जाये इसे वृक्षों से उतारने के पश्चात शीघ्र से शीघ्र छील कर बेच दें क्योंकि शत्रु कीट इसी बीहन लाख डंडियों में विद्यमान रहते हैं।
105.	**हमारे क्षेत्र के कुछ पीपल और रेन ट्री पर लाख लगी है। क्या परिपक्व होने के पश्चात इसे काट कर मुख्य पोषक वृक्षों पर चढ़ा सकते हैं?** हाँ, कर सकते हैं। सामान्यत: इन वृक्षों पर रंगीनी लाख होती है जिसे उचित समय पर बीहन के रूप में काटकर पलास, बेर या अन्य रंगीनी पोषक वृक्षों पर लगा सकते हैं। पीपल और रेन ट्री जैसे वृक्षों पर पक्षियों द्वारा लाख शिशु कीट पहुँच जाता है।
106.	**बीहन लाख डडिंयों से लाख शिशु कीट निकलने के पश्चात छीलने पर कितनी छिली लाख प्राप्त हो जाती है?** पलास बीहन से करीब 18-20% और कुसमी लाख, बीहन छीलने से करीब 40 प्रतिशत कुसुम वृक्ष से उत्पादित कुसमी बीहन बिना छीले ही बिकती है जो करीब बीहन वजन के 50 प्रतिशत तक होती है।
107.	**क्या मरी बीहन लाख डंडी को कीट संचारण के लिये उपयोग कर सकते हैं?** नहीं, मरे हुये गर्भित मादा कीट से शिशु कीट नहीं निकलेंगे।
108.	**जीवित एवं मरे हुये लाख पपड़ी की पहचान कैसे करेंगे?** जीवित कीट लगातार सफेद धागे या मोम निकालते हैं। यह हवा के कारण पपड़ी से हट जाते हैं और पुन: आ जाते हैं। यदि यह मोम धागे निकलना बन्द हो जाये तो समझना चाहिये कि मादा कीट मर चुके हैं। इसी प्रकार यदि लाख पपड़ी को निकालकर दो अंगुलियों के बीच यदि रगड़ें तो जीवित कीट से लाख रक्त निकलेगा अन्यथा सूखा रहेगा।
109.	**दूर से कैसे पता करेंगे कि वृक्ष के ऊपर लाख लगी है या लाख को जंगल या गांव में पेड़ों पर कैसे पता करेंगे?**

	जिन पेड़ों पर लाख होती है उसकी पत्तियाँ काले पाउडर के कारण काली दिखायी पड़ती है यह इसलिये होता है कि लाख कीट का मूत्र मधुरस के रूप में पत्तियों पर गिरता है जिसके फलस्वरूप वहाँ काले फफूंद का विकास हो जाता है। यह बारिश और शीतकाल में शीघ्र न सूखने के कारण स्पष्ट दिखायी देता है कभी-कभी लाख लगे पेड़ों के नीचे खड़े होने पर यही मधु ऊपर पानी गिरने की भाँति नजर आता है और पेड़ के नीचे की खर पतवार एवं जमीन भी काली हो जाती है।
110.	**हम एक नियमित लाख उत्पादक हैं। इधर कुछ दिनों से उत्पादन काफी कम हो गया है एवं वृक्षों पर बीहन भी अधिक लगाना पड़ता है। छिलाई करने पर सफेद और मटमैले रंग की इल्ली (लार्वा) निकलती है ये क्या है और इस समस्या का समाधान क्या है?** ये सफेद और मटमैले लार्वा लाख के शत्रु कीट हैं जो बाद में तितली बनते हैं। सफेद लार्वा (*युब्लेमा ऐमाबिलिस*) जीवित लाख कीट को तथा मटमैला लार्वा (*स्युडोहाइपेटोपा पल्वेरिया*) मरे एवं जीवित दोनों प्रकार के लाख कीट को खाता है यदि रोकथाम के उपाय न किये जाये तो इसकी जनसंख्या काफी बढ़ जाती है जिसके कारण उत्पादन तो कम होता ही है साथ में उत्पादित बीहन लाख की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है अत: इस समस्या के समाधान के लिये इनको नियंत्रित करना होगा।
111.	**कैसे पता करेंगे कि लाख में शत्रु कीटों का प्रकोप हो गया है?** लाख कीट विकास की प्रारम्भिक अवस्था में जब लाख अधिक न बना हो नाली नुमा संरचना या शत्रु कीट से निकला हुआ सूजी की भाँति मल या जाला दिखाई पड़े तो समझना चाहिये कि परभक्षी शत्रु कीटों का आक्रमण हो गया है। इसी अवस्था में ध्यान से देखने पर कई लाख कीट खोखले दिखायी दें या उसमें छिद्र हो तो समझना चाहिये कि परजीवी कीटों का आक्रमण हो चुका इसी प्रकार बाद की अवस्था में भी लाख पपड़ी में छिद्र दिखायी दे या भण्डारण के समय गुबंद नुमा संरचना दिखाई दे तो समझना चाहिये कि परभक्षी कीटों के लार्वा भीतर विद्यमान है।
112.	**लाख के परजीवी एवं परभक्षी कीटों को देखने के लिये क्या करना पड़ेगा?** लगभग 6 इंच लम्बी लाख लगी 2-4 टहनियों को एक काँच के गिलास में रखकर सूती कपड़े से ढ़ककर रबर बैन्ड लगा दें। 7-10 दिन पश्चात कई

	प्रकार के छोटे छोट कीट दिखायी देंगे। लाख के शत्रु कीट (परजीवी) हैं। लाख पपड़ी पर जहाँ लाख पाउडर हो गया है, हटाकर देखने से नीचे परभक्षी कीट के लार्वा दिखायी पड़ेंगे।
113.	**लाख फसल पर कीट कहाँ से आते हैं?** इनके दो स्रोत हैं (i) बीहन लाख (ii) आसपास की लाख फसल से। बीहन लाख से नई फसल पर परजीवी जाने से रोकने के लिये कीट संचारण हेतु बीहन लाख को 60 मेश नाइलोन जाली में भरकर पेड़ों पर चढ़ाना चाहिये लेकिन दूसरों की लाख फसल से रोकने का कार्य काफी कठिन है फिर भी सलाह दी जाती है कि जब भी नये क्षेत्रों में लाख की खेती प्रारंभ की जाये तब जाली में ही बीहन भरकर लगाना चाहिये।
114.	**मुख्य तकनीकें कौन-कौन सी है जिससे शत्रु कीटों को नियंत्रण में रखा जा सके?** पूर्व बचाव: ऐसे बीहन लाख का उपयोग करें जिसमें शत्रु कीट कम से कम हो या नहीं हो (ii) कीट संचारण के लिये 60 मेश नाइलान जाली के थैले का उपयोग (iii) जैसे ही शिशु कीट निकलना समाप्त हो जाये, खाली डंडियाँ हटवा लें। (iv) कटी लाख को शीघ्र से शीघ्र छीलना (v) छिली लाख की जल्दी धुलाई या बेचना। सुरक्षा: (i) चीटियों को बढावा देना (ii) पक्षियों को शत्रु कीटों को खाने के लिये बढ़ावा देना (iii) जैविक विधि द्वारा शत्रु कीट की रोकथाम (iv) क्राइसोपा के अण्डे हाथ से चुनकर नष्ट करना इत्यादि।
115.	**नाइलॉन जाली कहाँ से प्रात की जा सकती है?** सामान्यत: यह जाली समुन्द्र से झींगा मछली इत्यादि पकड़ने में उपयोग होती है अत: यह बंगलोर, कोलकता, मुम्बई, बालेश्वर (उड़ीसा) इत्यादि स्थानों में मिल सकती है। मिलने में समस्या आये तो भा. प्रा. रा. एवं गो. संस्थान से सम्पर्क किया जा सकता है। एक मीटर चौड़ाई की जाली करीब रू 15 प्रति मीटर की दर से मिल सकती है। रोल 30 मीटर लम्बा होता है। प्रत्येक थैली 27X10 से.मी. नाप की होती है।
116.	**किस समय शत्रु कीटों का आक्रमण अधिक होता है?** सामान्यत वर्षा ऋतु कीटों के लिये उपयोगी होती है अत: कुसमी लाख की अगहनी (जून-जुलाई से जनवरी-फरवरी) तथा रंगीनी लाख की कतकी

	(जून-जुलाई से अक्टूबर-नवम्बर) में प्रकोप अधिक होता है। अन्य फसल में तापमपन जैसे ही थोड़ा बढ़ता है परभक्षी कीटों की संख्या भी बढ़ने लगती है।
117.	**शत्रु कीटों से फसल सुरक्षा अपनाने पर भी इनका आक्रमण हो जाये तो इसे कैसे रोका जा सकता है?** यदि सुरक्षात्मक प्रक्रिया अपनाने के पश्चात भी शत्रु कीटों का प्रकोप हो तो रासायनिक दवा का छिड़काव करना चाहिये। इथोफेनप्राक्स 10 ई.सी. 0.02 प्रतिशत (2 मि.ली. दवा/प्रति ली. पानी की दर से) कीट संचारण के एक माह पश्चात लाख कीट लगी टहनियों पर छिड़काव कर सकते हैं। इससे तीनों प्रमुख परभक्षी कीट *स्युडोहाइपेटोपा पल्वेरिया, युब्लेमा अमाबिलिस* और *क्राईसोपा* नियंत्रित हो जाते हैं। *क्राइसोपा* मुख्य रूप से कुसमी लाख कीट को खा जाता है और पूरी फसल को समाप्त करने में सक्षम है। लाख कीट थोड़ा बड़ा हो जाये तो दूसरी और तीसरी अवस्था), नर वयस्क कीट निकलने के अनुमानित एक सप्ताह पूर्व, पुनः इसी दवा का छिड़काव करना चाहिये।
118.	**कुसमी लाख कीट के ऊपर कभी-कभी हरा पतंगा जिसके अंडे लाख लगी टहनियों के ऊपर बालनुमा संरचना के सिरे पर विद्यमान होते हैं, दिखायी देते हैं, इसके मटमैले लार्वा अपने शरीर के ऊपर लाख के मोम लपेट कर, लाख कीट को खाकर नष्ट कर देते हैं। ये क्या हैं और इन्हे कैसे रोका जा सकता है?** ये क्राइसोपा कीट हैं जो मुख्य रूप से कुसमी कीट को खाता है इसके अतिरिक्त ये दलहन और सरसों परिवार वाले पेड़ों पर लगे ऐफिड्स को भी खा जाता है। सामान्यतः इसे लाभकारी कीट की श्रेणी में रखा जाता है। लेकिन लाख उत्पादकों के लिये ये हानिकारक है। सामान्यतः ये अप्रैल-मई और अगस्त-सितम्बर माह में कुसमी फसल पर आक्रमण करते हैं। इनके अण्डों को देखकर हाथ से मसल दिया जाता है अन्यथा इथोफेनप्राक्स 10 ई. सी. (नुकिल) 0.02 प्रतिशत (2 मि.ली. प्रति ली. की दर से) छिड़काव करने पर इनके लार्वा जमीन पर गिर जाते हैं तत्पश्चात मर जाते हैं।
119.	**किस समय लाख की खेती में दवा का छिड़काव नहीं करना चाहिये?** जब लाख शिशु टहनियों पर चल रहें हो और जब नर वयस्क कीट निकलकर प्रजनन कर रहे हों उस समय दवा का छिड़काव कभी भी नहीं करना चाहिये इसके अतिरिक्त यह भी ध्याान रखना चाहिये की नर वयस्क कीट निकलने के अनुमानित समय के 3-4 दिन पहले से भी कोई छिड़काव न करें।

120.	**कीटनाशक छिड़काव करते समय क्या-क्या सावधानियाँ लेना चाहिये?** बताये गये कीटनाशक का ही छिड़काव उचित मात्रा और सही समय पर करना चाहिये। कीटनाशक का छिड़काव तभी करें जब दूसरी विधियां काम न करें। ध्यान रहे कि दवा छिड़कते समय उस दिशा में खड़े होकर छिड़के कि हवा से दवा स्वयं के ऊपर न आये और लाख लगी टहनियों पर विद्यमान मोम पूरी तरह से धुल जाये। पत्तियों पर छिड़काव न करें छिड़काव करते समय सिर एवं चेहरे को कपड़े से ढक लेना चाहिये। छिड़काव के पश्चात बाल्टी धो देना चाहिये लेकिन तालाब में न धोयें।
121.	**कभी-कभी कीट संचारण हेतु बीहन लाख पड़ों पर बांधते समय चींटे काटने लगते है इससे बचने का क्या उपाय है?** संचारण करते समय शरीर पर नीम का तेल या राख लपेट कर पेड़ों पर चढ़ने से चींटे नहीं काटते।
122.	**विभिन्न फसलों में वयस्क नर लाख कीट कब-कब निकलते हैं?** रंगीनी लाख कीट वर्षाकालीन फसल (कतकी) में कीट संचारण के 6 सप्ताह पश्चात (लगभग 20-30 अगस्त के बीच) और ग्रीष्मकालीन फसल (बैसाखी) में करीब 15 सप्ताह पश्चात (लगभग 8-24 फरवरी) तथा ग्रीष्म और शीतकालीन कुसमी फसल में क्रमशः कीट संचारण के 10 सप्ताह (70 दिन) तथा 6-7 सप्ताह (45 दिन) पश्चात वयस्क नर कीट निकलते हैं।
123.	**शिशु कीट टहनियों पर बैठने के कुछ दिनों पश्चात, लम्बे वाले कीट खोखले हो जाते हैं कभी कभी तो पत्तों के पूरे वृन्त पर खोखले रहते है और यहाँ कि लाख भी मोटी नहीं होती ऐसा क्यों होता है?** लाख कीट तीसरी अवस्था में नर और मादा में विभक्त हो जाते हैं लम्बे कीट नर के प्यूपा हैं जिसमें से कुछ दिनों पश्चात नर वयस्क कीट निकलकर मादा के साथ प्रजनन करते हैं नर कीट निकलने के पश्चात प्यूपा खोखला हो जाता है अतः लम्बे कीट यदि एक किनारे से खुला हो तो डरने की बात नहीं है गोल मादा कीट नहीं मरना चाहिये क्योंकि इन्ही कीट से ही बाद में लाख निकलेगा।
124.	**तीन प्रमुख परभक्षी कीटों के अतिरिक्त और भी कौन से हानिकारक कीट हैं एवं इनकी रोकथाम कैसे करें?** कई प्रकार के छोटे-छोटे (लगभग 1.3 मि.मी. लम्बे) परजीवी कीट होते

	हैं। ये लाख के शरीर में अपने अंडे देते हैं जिनसे कुछ दिनों के पश्चात लार्वा निकलकर लाख कीट को खा लेते हैं। कभी-कभी तो ये पूरी फसल ही नष्ट कर देते हैं। इनकी रोकथाम के लिये बीहन लाख को जाली में भरकर लगाना चाहिये।
125.	**क्या कीटनाशक प्रयोग किये बिना भी लाख की खेती की जा सकती है?** हाँ, सच्चाई तो यह है कि देश का 95 प्रतिशत उत्पादन बिना किसी कीटनाशक छिड़काव के होता है और हमें तभी छिड़कना चाहिये जब हम बीहन लाख का उत्पादन कर रहे हों और अधिक शत्रु कीटों के आक्रमण से फसल बचानी हो ।
126.	**किसी-किसी क्षेत्रों में लगातार कोहरा (कुहासा) या धुंध होने से या लगातार बादल रहने से लाख फसल पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। इससे कैसे बचा सकते है?** सामान्यत: ऐसी स्थिति में लाख कीट द्वारा विसर्जित मधुरस सूख नहीं पाता और जिसके कारण इस स्थान पर फफूंद विकसित हो जाता है फलस्वरूप स्वास छिद्र बन्द हो जाता है एवं कीट मरने लगते हैं। इसे रोकने के लिये 0. 01 प्रतिशत कारबेण्डाजिम 50 प्रतिशत डब्लू. पी. (14 ली. पानी में 3 ग्राम पाउडर) का छिड़काव तीन के सप्ताह अन्तराल पर करना चाहिये। यदि न कर पाये तो लाख लगे वृक्षों के आस-पास धुंआँ करने से कोहरे का प्रभाव कम हो जाता है ध्यान रहे कि आग नहीं जलना चाहिये अन्यथा गर्मी से लाख मर जायेगी।
127.	**बीहन को बण्डल बनाने एवं जाली को पेड़ पर बांधने के लिये प्लास्टिक या नाइलॉन की सुतली क्यों प्रयोग करना चाहिये?** जूट या नारियल सुतली को चूहे या गिलहरी काट देते हैं जब कि प्लास्टिक या नाइलॉन को नहीं काट पाते।
128.	**गिलहरी लाख को क्यों कुतरती है?** गिलहरी लाख में विधमान परभक्षी कीटों को खाने आती है।
129.	**लाख फसल को गिलहरी से कैसे बचायें?** लाख पपड़ी को कुतरने के अतिरिक्त, कीट संचारण हेतु बांधी गयी बीहन लाख डंडियों को भी गिरा देती है। इससे बचने के लिये पोषक वृक्ष के मुख्य तने के चारो तरफ जमीन से 3-4 फुट उंचे एक मीटर चौड़े पालीथीन (बरसाती) लपेट देना चाहिये। उन्ही दिनों लपेटें जब (i) बीहन बांधा गया हो (ii) जब

	पपड़ी मोटी होने लगे। चिकने सतह के कारण गिलहरी प्लास्टिक सीट को नहीं पार कर सकती। ध्यान रहे कि इस वृक्ष की शाखायें ऐसे वृक्ष के नजदीक न हो जिस पर पालीथीन नहीं लगाई गयी हो।
130.	**जब लाख विशेष रूप से कुसमी परिपक्व होने लगती है कहीं-कहीं पक्षी इसे कुतरने लगते हैं फलस्वरूप काफी लाख नीचे गिरती है इसे कैसे रोका जाये?** सामान्यत: पक्षी लाख-परभक्षी कीट *युब्लेमा ऐमाबिलिस* के लार्वा को ढूंढ कर खाता है। अत: इसे रोकने के लिये शत्रु कीट प्रबन्धन हेतु बताये गये उपाय करना चाहिये।
131.	**क्या लााख की खेती व्यापारिक दृष्टि से बड़े पैमाने पर किया जा सकता है यदि हाँ तो कौन सी लाख अधिक लाभकारी है?** हाँ, किया जा सकता है। कुसमी लाख खेती रंगीनी की तुलना में अधिक लाभप्रद है लेकिन यदि सिर्फ रंगीनी पोषक वृक्ष हो तो उसे भी उपयोग करना चाहिये।
132.	**विभिन्न पोषक वृक्षों की काट-छाँट करने का उचित समय क्या है और दो फसलों के बीच विश्राम कितने दिनों का होना चाहिये?** पलास और बेर की कीट संचारण के करीब 5-6 माह पूर्व काट-छाँट की जाती है पलास पर ग्रीष्मकालीन फसल के लिये अप्रैल माह में तथा वर्षाकालीन फसल के लिये फरवरी माह में। बेर पर ग्रीष्मकालीन रंगीनी फसल हेतु मई के आखिरी सप्ताह में तथा वर्षा कालीन रंगीनी (कतकी) या शीतकालीन (अगहनी) के लिये फरवरी माह में। कुसुम वृक्ष की काट-छाँट सामान्यत: कीट संचारण के करीब 18 माह पूर्व जनवरी-फरवरी या जून-जुलाई में किया जाता है। दो फसलों के बीच का विश्राम समय इसी की भाँति पलास और बेर में 5-6 माह तथा कुसुम के लिये करीब 18 माह होता है। खैर पर जुलाई-अगस्त में शीतकालीन (अगहनी) फसल हेतु करीब 5 माह पूर्व मार्च में तथा सेमियालता पर इसी फसल हेतु 6 माह पूर्व जनवरी-फरवरी में काट-छाँट की जाती है।
133.	**बिना पूर्व में काट-छाँट वाले पोषक वृक्षों पर बीहन चढ़ाकर कीट संचारण किया था लेकिन काफी लाख शिशु मर गये इसका क्या कारण हो सकता है?** लाख कीट का मुखांग भेदक एवं इस चूसक प्रकार का होता है कि पुरानी और मोटी छाल वाली टहनियों में अपना मुखांग नहीं घुसा पाते फलस्वरूप भोजन न मिलने के कारण कीट मर जाते हैं अत: कीट संचारण के समय नर्म

	टहनियों की उपलब्धता सुनिश्चित कर लेना चाहिये।
134.	**हमने नये क्षेत्र में लाख खेती आरंभ किया था लेकिन पहली फसल नष्ट हो गयी क्या अगली फसल भी नष्ट हो जायेगी?** नहीं, ऐसा कोई आवश्यक नहीं है। निराश नहीं होना चाहिये कम से कम अगले 2-3 वर्ष तक प्रयत्न करना चाहिये। साथ ही पता करने की कोशिश करना चाहिये कि इस क्षेत्र में उपयुक्त फसल और क्षेत्र कौन सा रहेगा। यदि ग्रीष्मकालीन फसल फेल हो जाये वर्षाकालीन फसल से खेती शुरू करना चाहिये। धीरे-धीरे जब लाख कीट नई परिस्थिति में ढल जायेंगे तो मरने की समस्या भी समाप्त हो जायेगी।
135.	**नये क्षेत्र में जहां लाख पोषक वृक्ष उपलब्ध हैं लाख खेती आरम्भ करना चाहते हैं इसके लिये क्या सावधानियां लेनी चाहिये?** प्रारंभ से ही कृषकों को चाहिये (i) वृक्षों की काट-छाँट की प्रक्रिया के बिना कीट संचारण न करें (ii) कीट संचारण की प्रक्रिया जाली में ही भर कर करें (iii) फसल कटाई तभी करें जब शिशु कीट निकलना आरम्भ हो जाये (iii) 400-500 पेड़ों पर जो अलग-अलग स्थानों पर हो, बीहन उत्पादन के लिये रखें और उसकी देख रेख एक प्रशिक्षित व्यक्ति के द्वारा हो।
136.	**लाख खेती में उपयोग होने वाले यंत्र कौन** से **हैं एवं कहां से प्राप्त कर सकते हैं?** सामान्यत: खेती बारी में काम आने वाले यत्रं जहां मिलते हैं या बीज की दुकानों में भी उपलब्ध हो जाते हैं सिकेटियर: रोलकट (ब्लेड सिर्फ एक तरफ); छिलाई का चाकू, करीब एक फीट लम्बी कुल्हाड़ी या दावली (दाव): तेज धार वाली दावली का आगे का सिरा मुड़ा हुआ: राकिंग स्प्रेयर: गटूर का लम्बा पाइप वाला: लोहे की बाल्टी 15 ली.: नाइलॉन जाली – 60 मेश की, तराजू – स्प्रिंग तराजू 10 कि. ग्रा तौलने तक का।
137.	**यदि कीट संचारण इस प्रकार से किया जाये कि पेड़ की पूरी टहनियों पर ही लाख कीट बैठ जाये तो क्या फसल तैयार होने तक कीट जीवित रहेंगे?** यदि वृक्षों की पूरी टहनियों पर कीट फैल जायेंगे तो फसल के मरने की सम्भावना बनी रहती है क्योंकि पोषक वृक्ष उतनी मात्रा में खाद्य पदार्थ उपलब्ध नहीं करा पाते तथा टहनियों के सूखने का डर बना रहता है अत: 15-20: टहनियाँ बिना लाख कीट के तथा प्रत्येक टहनी की 20-25: स्थान खाली

	रहना चाहिये।
138.	**हमारे क्षेत्र में कोई लाख पोषक वृक्ष नही है, ऐसे पेड़ बतायें जिस पर लाख लगा कर शीघ्र से शीघ्र लाख की खेती प्रारम्भ कर सकें ?** हमारी राय से कुसमी पोषक वृक्ष को प्राथमिकता देनी चाहिए। बंजर या खेतों की मेड़ पर बीज द्वारा बेर का वृक्ष आसानी से लगाया जा सकता है। चार वर्ष पश्चात् ये वृक्ष लाख लगाने लायक हो जायेंगे। साथ ही गलवांग के पौधे लगा कर इसे झाड़ीदार बना लेना चाहिए। ये भी चार वर्ष पश्चात ही लाख लगान के लिए तैयार हो जाता है। इन दोनों का समन्वय लाख की खेती के लिए अत्यन्त उपयोगी है। बेर या शीतकालीन(अगहनी) तथा गलवांग पर ग्रीष्मकालीन फसल लेना चाहिए। इससे फसल चक्र भी पूरा हो जाएगा तथा बीहन लाख की भी उपलब्धता बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त यदि 1.0 x 1.0 मी॰ की दूरी पर फ्लेमिंजिया सेमियालता लगाने से अतिरिक्त लाख का उत्पादन भी मिलेगा। निम्न प्रकार से विभिन्न जाति के वृक्ष उपयोगी होंगे। (1) बेर: शीतकालीन कुसमी फसल से बीहन लाख का उत्पादन। (2) गलवांग: ग्रीष्मकालीन कुसमी फसल से बीहन लाख का उत्पादन। (3) फ्लेमिंजिया सेमियालता: शीतकालीन कुसमी फसल।
139.	**अलग जाति के पोषक वृक्षों पर किसी विशेष मौसम में ही लाख खेती करने के पीछे क्या सिद्धान्त है?** सामान्यत: सदाबहार वृक्षों को किसी भी मौसम में लाख की खेती के लिए उपयोग कर सकते हैं। जैसे-कुसुम (कोसम), गलवांग (ऐलबीजिया लूसिडा), पीपल जाति के वृक्ष इत्यादि। जबकि दूसरे प्रकार के वृक्ष जिसमें एक विशेष समय (मुख्य रुप से गर्मी में) पतझड़ होता है। इन्हें एक ही फसल के लिए उपयुक्त पाया गया है। जैसे-बेर, पलास, फलेमिंजिया सेमियालता, प्रोटियम सिरेटम इत्यादि।
140.	**वृक्षों से फसल कटाई कैसे करनी चाहिए?** फसल कटाई के समय लाख लगी टहनियों को ही काटना चाहिए। सम्पूर्ण कटाई के समय फसल कटाई इस प्रकार से करना चाहिए कि साथ में काट-छाँट की प्रक्रिया भी सम्पन्न हो जाए। कभी भी कम मेहनत या खर्च कम करने के लिए मोटी डालियाँ नहीं काटना चाहिए अन्यथा वृक्षों का आकार छोटा हो जाएगा और अगली फसल के लिए कम संख्या में टहनियाँ मिलेंगी। जहाँ तक हो सके बीहन कटाई सिकेटियर से करनी चाहिए। दावली या कुल्हाड़ी से करने पर लाख

	पपड़ी झड़ने लगती है। पलास और कुसुम के विपरीत बेर की टहनियाँ लाख कीट के विकास के साथ-साथ मोटी भी हो जाती है जो सिकेटियर से नहीं कटेंगी अत: इन्हें आरी की मदद से काट सकते हैं।
141.	**बीहन लाख काटने का सही समय क्या होना चाहिए?** बीहन लाख की कटाई ऐसे समय करना चाहिए कि छँटाई, बण्डल बाँधना एवं पेड़ों पर बाँधते ही शिशु कीट निकलने लगे।
142.	**कभी-कभी लाख पपड़ी मोटी नहीं हो पाती है,क्यों?** इसके प्रमुख कारण हो सकते हैं (1) काफी संख्या में मादा कीड़ों का प्रजनन न होना (2) वातावरण का तापमान कई दिनों तक कम रहना (3) लाख कीट दूर-दूर बैठे हों।
143.	**अलग-अलग जाति के वृक्षों से अनुमानित उत्पादन कितना होगा?** पलास वृक्ष 500 ग्राम बीहन अक्टूबर/नवम्बर में लगाकर एक से डेढ़ वर्ष पश्चात् इसी समय करीब 5 किग्रा बीहन लाख और 2.0 किग्रा कच्ची लाख प्राप्त कर सकते हैं। इसी प्रकार बेर वृक्ष से रंगीनी लाख 1-1.5 किग्रा लगाकर 7-8 किग्रा कच्ची लाख तथा 15-20 किग्रा कुसमी बीहन लाख 6 माह पश्चात प्राप्त किया जा सकता है। इसी प्रकार औसत आकार के एक कुसुम वृक्ष पर 5-6 किग्रा लगाकर एक वर्ष में 70-80 किग्रा कुसमी बीहन ले सकते हैं।
144.	**लाख डंडी से पपड़ी छुड़ाने का क्या तरीका है जिससे छिली लाख का बाजार मूल्य अधिक से अधिक मिले?** लाख पपड़ी जितनी बड़ी होती है उसका मूल्य उतना ही अधिक मिलेगा एवं चूरा लाख की कीमत कम मिलेगी। सामान्यत: कुसुम से काटी गई कुसमी लाख बिना छिलाई के बिकती है क्योंकि इसमें मिलावट की संभावना नहीं होती। छिलाई चाकू से इस प्रकार करें कि पपड़ी के छोटे टुकड़े न हो पाये। घर में रखी लाख डंडी को छुड़ाने से एक दिन पहले पानी छिड़क दें तथा अगले दिन पपड़ी को घुमाकर निकाला जा सकता है इस तरह से लाख चूरा नहीं हो पाती।
145.	**क्या लगातार एक ही वृक्ष पर कीट पालने से पोषक वृक्षों को नुकसान पहुँचता है?** हाँ, हो सकता है। पोषक वृक्षों को कुछ पोषक तत्वों की आवश्यकता होती है। विशेष रुप से तब जब कीड़े काफी बड़े होने लगते हैं। अत: कीट

	संचारण के 15 दिनों के पश्चात् गोबर की खाद डालने से कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ेगा।
146.	**किस लाख पोषक वृक्ष के साथ कौन सा दूसरा वृक्ष लगायें जिससे आमदनी अधिक हो?** कुसमी और रंगीनी लाख पोषक वृक्षों का समन्वय अलग-अलग होता है। समन्वय इस प्रकार से होता है कि उत्पादकों को बीहन कमी का सामना न करना पड़े और दोनो ही मौसम में 6 माह के अन्तराल पर उत्पादन मिलता रहे। (1) कुसमी लाख उत्पादनः कुसुम एवं बेर; कुसुम एवं सेमियालता; गलवांग एवं बेर या सेमियालता; कुसुम या गलवांग एवं खैर इत्यादि। (2) रंगीनी लाख उत्पादनः पलास एवं बेर; पीपल जाति के वृक्ष एवं पलास या बेर इत्यादि।
147.	**लाख का भंडारण कैसे करना चाहिए?** सामान्यतः कई उत्पादक डंडी समेत ही लाख का भंडारण करते हैं और जब बेचना होता है आवश्यकतानुसार छीलकर बेचते हैं। डंडी समेत बिना छिलाई की लाख का भंडारण करने से सियुडोहाइपेटोपा पल्वेरिया नामक परभक्षी कीट का आक्रमण अधिक होता है जिसके फलस्वरूप लाख की गुणवत्ता पर सीधा प्रभाव तो होता ही है साथ में उत्पादन भी घट जाता है अतः लाख की छिलाई करके ही भंडारण करें। छिलाई के पश्चात् हवा में अच्छी तरह सुखाकर ऐसे जूट बोरे में रखे जिसके छिद्र बड़े-बड़े हो। भंडारण के समय लाख को अधिक से अधिक हवा मिलना चाहिए। लाख की ऊँचाई 1-1.5 फीट से अधिक न हो तो अच्छा है। बोरे को एक दूसरे के ऊपर नहीं रखना चाहिए अन्यथा लाख जम कर बड़े-बड़े पत्थर के रूप में हो जाएगा जिसको तोड़ना मेहनत का कार्य है।

148.	**कभी-कभी लाख उत्पादकों को विपणन की समस्या का सामना करना पड़ता है, दाम कम मिलता है या खरीददार नहीं मिलता। इस समस्या को कैसे दूर करें?** लाख उत्पादक गाँव स्तर पर सहकारी समिति का निर्माण कर लें। सभी उत्पादक अपना उत्पादन एक जगह एकत्रित करके समिति के माध्यम से ही बिक्री करें, ध्यान रहे कि एकत्रित करने और विक्रय करने के बीच 10-15 प्रतिशत तक का वजन घट जायेगाा अत: उसी के अनुसार क्रय-विक्रय का कार्य करना होगा। बिक्री के लिए सीधे लाख फैक्टरी से भी सम्पर्क किया जा सकता है, लाख नमूने की जाँच करके ही दाम निश्चित किया जाता है। यदि फिर भी कोई समस्या हो तो भारतीय प्राकृतिक राल एवं गोंद संस्थान, नामकुम, राँची से इस प्रक्रिया के लिए मदद ली जा सकती है।
149.	**बीहन लाख के क्रय-विक्रय करने में क्या समस्या आ सकती है?** जहाँ बीहन लाख खरीदें उसकी गुणवत्ता अवश्य देख लेना चाहिए यानि इसमें कहीं खाली डंडिंयाँ तो नहीं है, शिशु कीट निर्गमन की क्या स्थिति है, परभक्षी शत्रु कीटों की संख्या, लाख पपड़ी की मोटाई ओर लाख मरी तो नहीं है इत्यादि। इसके अतिरिक्त यह भी ध्यान देना है कि क्रय और विक्रय के बीच का अंतराल कम से कम रहे क्योंकि बीहन लाख से लगातार पानी निकलने से वजन प्रतिदिन 10-15 प्रतिशत तक कम हो सकता है।
150.	**लाख खेती हेतु प्रशिक्षण कहाँ से प्राप्त किया जा सकता है और कौन-कौन से कार्यक्रम चलाये जाते हैं?** सरकारी संस्थानों से मनोनीत कर्मचारियों के लिए एक साप्ताहिक कार्यक्रम होता है इसी प्रकार सरकारी और गैर सरकारी संस्थानों द्वारा मनोनीत महिलाओं एवं कृषकों के लिए एक साप्ताहिक कार्यक्रम सोमवार से शनिवार तक चलाया जाता है। इसके लिए प्रशिाक्षण शुल्क रू॰ 500/- तथा रूकने का रू॰ 300/- पूरे सप्ताह के लिए देय होता है। साहित्य का दाम भी इसमें शामिल है।
151.	**साप्ताहिक प्रशिक्षण कार्यक्रम के अर्न्तगत कौन-कौन से मुख्य विषय प्रशिक्षण कार्यक्रम में शामिल किये जाते हैं?** लाख कीट एवं जीवन चक्र; लाख फसलें एवं इनका चक्र; कृषक और वैज्ञानिक विधि से लाख की खेती; लाख पोषक वृक्षों का बगान लगाना; पलास एवं बेर पर रंगीनी लाख की खेती; कुसुम और बेर पर कुसमी लाख की खेती; बीहन संरक्षण व पोषक वृक्षों का उपयोग; बीहन लाख का रख-रखाव एवं

	स्थानान्तरण; कीट निर्गमन का पूर्वानुमान; बीहन लाख की आवश्यकता और उत्पादन का आकलन; लाख चलचित्र प्रदर्शन; लाख फसल का फार्म परिदर्शन; लाख फैक्टरी का परिदर्शन; लाख के उपयोग; लकड़ी फर्नीचर पर प्रयुक्त होनेवाली लाख वार्निश बनाने व करने की विधि और प्रश्नोत्तरी सत्र।